RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल—011/2018-20

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 45, अंक : 33-34 एक प्रति 10 : रुपये
कुल पृष्ठ : 48
रविवार 8-15 नवम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण एवं दीपावली विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ले०—कवि श्री कस्तूरचन्द "घनसार" कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज.)

अविद्या का अन्धकार बराबर, छाया भारत देश रहा।
उस तमसा में निशि के राजा, करते चले थे क्लेश रहा।।
विद्या की उषा नहीं पनपी, नहीं वैदिक रवि प्रकटाया।
धर्म-कर्म सद् विद्या सुखदा, लोप हुई जग भरमाया।।

वेद प्रकाश हीन सब भारत, जिसमें पोपा-पाखण्डी।
भरमाती थी सारी जग को, गुरुडमों की लगी मण्डी।"
वर्ण व्यवस्था बिगड़ी चली सब, मानव-मानव ठुकराये,
नियम-धर्म सब भिन्न-भिन्न हो, गुरुडमी सब कर पाये।।

अस्तित्व न रह पाये थे, पाहन ईश्वर कर बैठे।
कैसे? वैदिक ज्ञान प्राप्त हो, झूठे मद में थे-ऐंठे।।
घोर-अन्याय अन्धेरा घर-घर, कौन? कह ये दीपाली।
केवल दीप जलाये बैठे, वही दिवाली-उजाली।।

इधर चढ़ी तमकार रूप धर, घर-घर धसगी आ करके।
उधर दयानन्द, दिव्य दीप ले, खड़े हुए थे जा करके।।
अन्धकार में चमत्कार था, योग-दीप, की ज्योति रही।
दिखलाई ब्रह्मचारी योगी, तेज रूप की ज्योति रही।।

"तमसो मा ज्योतिर्गमय" इस तर्फ जाना संकेत किया।
तब समझो ये आई दिवाली, दीप दिखाय सन्देश दिया।
वेद मार्तण्ड जब से उगा, तब से अविद्या-भाग चली।
घर-घर "आर्य ज्योतिरग्रा" ये अनुपम ऐसी ज्योति जली।।

क्षणिक दीप सी ज्योति जिसमें, दीपाली कर जान रखी।
वही अन्धेरी! जिसमें दुखदा, गौरवता में मान रखी।।
लाखों कोसों दूर पड़े थे, जैसा बन-मन मान लिया।
उच्च वर्ण की ठेकेदारी, झूठा मन अभिमान किया।।

वेदादेश न माना जिसने, मनमाने बन पन्थवादी।
भ्रम-कर्म भान्ति अविद्यासी, खूब बढ़ा दी थी व्याधी।।
अन्तरिक्ष लोप हुई है सारी, लौट कभी नहीं आवेगी।
दयानन्द ने दीप जलाया, कभी बुझ नहीं पावेगी।।

वैदिक दीप जले घर-घर में, सभी बराबर हो प्रकाश।
जभी दिवाली समझें साची, घर-घर विद्या-लक्ष्मी वास।।
करें नमस्ते मिले परस्पर, विज्ञ वरों को देवे मान।
आर्योपदेश सुने जिन द्वारा, 'घनसार' मिले सद् सुखदा ज्ञान।।

जगदुद्धारक-महर्षि दयानन्द

लेः—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कर्मयोगी महर्षि दयानन्द जी का सर्वश्रेष्ठ रूप जो सर्वप्रथम हमारे सम्मुख आता है वह जगदुद्धारक, सार्वभौम धर्मोपदेशक, सद्विद्याप्रचारक, संसारोपकारक सन्यासी का रूप है। सन्यासी पर किसी जाति या देश विशेष का अधिकार नहीं होता अपितु सन्यासी पूरे संसार की सम्पत्ति होता है। उसका ज्ञान सारे संसार के उद्धार के लिए होता है। संसार में जो कुछ भी है वह सब ब्रह्मज्ञानी सन्यासी का ही है। महर्षि मनु जी महाराज कहते हैं-

सर्वं स्वं ब्राह्मणस्येदं यत्किञ्चिज्जगतीगतम्।

इसलिए सन्यासियों को सारा संसार स्वामी कहकर सम्बोधित करता है। अतः इस रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे भारत के मान्य धर्मगुरू थे, ठीक वैसे ही अन्य देशों के भी थे। जिस प्रकार वे अपने देश में प्रचलित मत-मतान्तरों तथा कुप्रथाओं की समालोचना करते थे, उसी प्रकार अन्य देशों में प्रादुर्भूत मतों की भी समालोचना करते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने आर्य समाज के छठे नियम में लिखा है कि-

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

इस नियम से यह स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि दयानन्द जी का लक्ष्य कितना महान् था। वे किस प्रकार के समाज का निर्माण करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द ने पूरे विश्व के सुधार का बीड़ा उठाया था। महर्षि दयानन्द एक अच्छे चिकित्सक थे। उन्होंने देश के रोग का निदान किया। उन्होंने पाया कि देश का जन साधारण अच्छा है, सरल प्रकृति का है भोला-भाला है , केवल मार्ग से भटक गया है। महर्षि दयानन्द ने देखा कि वह मनुष्यत्व खो बैठा है। मनुष्य के सभी आवश्यक गुण उसे छोड़ बैठे हैं। इन गुणों को देशवासियों में पुनः स्थापित करने पर ही देश का कल्याण हो सकता है। यह उनकी धारणा थी और इन गुणों को धारण करने के लिए महर्षि ने प्रयास किया और इस प्रयास में उन्होंने अपने प्राण भी उत्सर्ग कर दिए। महर्षि दयानन्द ने देखा कि भारतीय अपना स्वाभिमान खो बैठे हैं, अपनी संस्कृति की उपेक्षा करने लगे हैं और उनका आकर्षण पाश्चात्य संस्कृति की ओर हो रहा है। अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर लोग अपने स्वाभिमान को खो बैठे थे। महर्षि ने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया था। वे संस्कृत भाषा के साहित्य से विशेष प्रभावित थे। संस्कृत साहित्य की बहुमूल्यता का उन्हें आभास था।

महर्षि दयानन्द की आर्ष ग्रन्थों में आस्था थी। उनका विश्वास था कि वैदिक संस्कृति सबसे प्राचीन संस्कृति है, सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है और उस संस्कृति का आधार सब सत्य विद्याओं की पुस्तक वेद है। महर्षि दयानन्द जी ने नारा दिया था कि प्राचीन संस्कृति की ओर चलो, वेदों से मार्गदर्शन लो। महर्षि दयानन्द की तीव्र इच्छा थी कि लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता से प्यार करें, अपने आर्ष साहित्य से प्यार करें, अपनी मातृभूमि के प्रति उन्हें लगाव हो और उसकी रक्षा के लिए वे अपना तन-मन और धन न्यौछावर कर दें। स्वाभिमान पुनः जागृत करने का इससे सुन्दर उदाहरण और क्या हो सकता है। इस बात को हम कैसे भूल सकते हैं कि महर्षि दयानन्द ने महात्मा गांधी के आविर्भाव से बहुत पहले ही स्वदेशी के अभियान की शुरूआत कर दी थी।

महर्षि दयानन्द ने यह भी देखा कि नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है। हमारे जीवन में सत्य का स्थान असत्य ने ले लिया है, प्रेम का स्थान घृणा ने, मित्रता के स्थान पर द्वेष, कलह ने आधिपत्य जमा लिया है। लोग विश्वास का उत्तर विश्वासघात से देने लगे हैं। महर्षि दयानन्द जी को यह देखकर अत्यन्त दुख हुआ कि भारत का निवासी कृतघ्न भी हो गया है, अपने भगवान को भुलाकर वह नास्तिक बन गया है। निराकार सर्वव्यापक परमात्मा के स्थान पर वह पत्थरों की पूजा करने में संलग्न है। अपने देश में अवतारों की होड़ सी लग गई थी। रोज कोई नया ठेकेदार जन्म लेता था और अपनी दुकान खोलकर बैठ जाता था। नारी शिक्षा का समूल नाश हो गया था। अनेक प्रकार की बुराईयों से हमारा देश इस तरह जकड़ा हुआ था कि महर्षि दयानन्द को यह सब देखकर अत्यन्त वेदना हुई। महर्षि ने नैतिक मूल्यों के पुर्नस्थापन का पूर्ण प्रयास किया। भोली भाली गरीब अनपढ़ जनता को नीति के साधारण सिद्धान्त सिखाए। सत्य बोलना सिखाया, सत्याचरण सिखाया, सदाचार सिखाया और ऐसा भी समय आया जबकि महर्षि दयानन्द का शिष्य झूठ नहीं बोल सकता है, गलत काम नहीं कर सकता है, उस पर भरोसा किया जा सकता है। ऐसी धारणा बन गई थी। यहाँ तक कि अंग्रेजों की अदालतों में भी उसकी गवाही निःसंकोच मानी जाती थी।

महर्षि को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक नया विचार मनुष्य के मानस में प्रविष्ट कर गया है, यह विकार था असमानता के दृष्टिकोण का। ईश्वर की सृष्टि में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं पाया जाता है। ईश्वर की दृष्टि में सब मानव एक से हैं। सबके लिए एक प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। जल, वायु, सूर्य का प्रकाश सभी के लिए है। कोई पक्षपात नहीं परन्तु न जाने मनुष्य ने कहां से भेदभाव सीख लिया। पुरूष अपने आपको नारी की अपेक्षा श्रेष्ठ समझने लगा। नारी के जीवन पर प्रतिबन्ध लगाए जाने लगे। जातियों को कर्म ने बनाया था परन्तु ये जातियां जन्मजात बन गई थी। इस प्रकार ऊँच-नीच की भावना ने जन्म लिया। समाज का एक वर्ग अपने आपको दूसरों से श्रेष्ठ समझता था। नारी के लिए शिक्षा के दरवाजे हमेशा बन्द कर दिए गए। शूद्रों केऊपर अत्याचार किए जाते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गुरू विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन कुरीतियों, बुराईयों, अत्याचारों, अन्धविश्वासों तथा पाखण्डों के खिलाफ आवाज उठाई। महर्षि दयानन्द ने मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा दी। महर्षि दयानन्द जी चाहते थे कि मनुष्य वेद के अनुसार अपना आचरण करे। इन्हीं कुरीतियों और बुराईयों के खिलाफ लड़ते हुए उन्होंने अपने जीवन की परवाह नहीं की और दीपावली के दिन इस संसार से प्रयाण किया।

महर्षि दयानन्द के 137वें निर्वाण दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प लें कि महर्षि दयानन्द ने जिन कुरीतियों और बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाई थी, अपने गुरू की आज्ञा का पालन करते हुए राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित किया था उन्हीं कुरीतियों, पाखण्डों और अन्धविश्वासों के खिलाफ लड़ने का संकल्प लेंगे। यही हमारी महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

महर्षि दयानन्द का निर्वाण और दीपावली का पर्व

ले०—श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण सन् 1883 में दीपावली के दिन हुआ था। स्वामी जी ने अजमेर नगरी में अपने नश्वर शरीर को त्यागा। स्वामी जी को जोधपुर में विष दिया गया था। स्वामी जी शाहपुर से चलकर जोधपुर पहुंचे थे। जब शाहपुर से जाने वाले थे तो स्वयं शाहपुर नरेश श्रीचरणों में उपस्थित हुए और अभिवादन करके इस बात का संकेत किया था कि आप जोधपुर तो पधारते हैं परन्तु वहां वेश्या आदि का खण्ड़न न करना। इस कथन की पृष्ठभूमि यह है कि जोधपुर के महाराजा एक वेश्या के जाल में फंसे हुए थे और यह स्पष्ट ही था कि महर्षि दयानन्द उनके दुराचार के विरूद्ध खुले शब्दों में उपदेश दिए बिना नहीं रहेंगे। इसीलिए महर्षि दयानन्द के हितचिंतक अनिष्ठ की शंका करते थे। इसीलिए कुछ भक्तों ने भी भावी विपत्ति के भय से महाराज से हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि वहां न जाए। स्वामी जी महाराज ने शाहपुर नरेश को उत्तर दिया था कि राजन्! मैं बड़े वृक्ष को नुहरने से नहीं काटता, उसके लिए तो बड़े शस्त्र की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार महर्षि ने अपने भक्तों के उत्तर में कहा था, यदि लोग हमारी अंगुलियों को बत्ती बनाकर जला दें तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहां जाकर सत्योपदेश अवश्य करूंगा।

ऊपर की घटनाएं एक प्रकार से भविष्य की ओर स्पष्ट रूप में संकेत ही थी। स्वामी जी ने अपने भाषणों में राजाओं के आचरण की शुद्धता पर काफी जोर दिया था। जब राजा के दरबार में वेश्या को देखा तो उन्होंने राजा को कड़ी फटकार लगाई। उन्होंने कहा कि राजन्! राजा सिंह के समान होता है और जगह-जगह घूमने वाली वेश्याएं कुतिया के समान होती हैं। राजा का सम्बन्ध सिंहनियों से उचित है, कुतिया से नहीं। परिणामस्वरूप महाराजा की नन्हीं जान वेश्या स्वामी जी की शत्रु बन गई। जोधपुर नरेश का एक दरबारी फैजुल्ला खाँ स्वामी जी का शत्रु बन गया था। इसका कारण था कि स्वामी जी द्वारा इस्लाम की समीक्षा। इन सभी ने स्वामी जी के विरोध में षड्यन्त्र बनाया। स्वामी जी के रसोईए से मिलकर उन्हें घातक विष दिया गया। उसी के परिणामस्वरूप दीपावली के दिन अजमेर नगरी में स्वामी जी महाराज का शरीरान्त हुआ। सन् 1824 ई. में स्वामी जी का जन्म हुआ था, किन्तु 1838 ई. में टंकारा ग्राम के एक शिवालय में शिवरात्रि को जो ज्योति प्रज्वलित हुई थी, वह चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैलाकर अन्ततः सन् 1883 की दीवाली को अन्य दीपों को प्रज्वलित कर स्वयं लुप्त हो गई।

सन् 1863 में जब महर्षि दयानन्द ने अपनी शिक्षा पूर्ण करके गुरू से विदा मांगी तो स्वामी विरजानन्द जी ने कहा कि देश का उपकार करो, सत्यशास्त्रों का उद्धार करो, मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटा दो और वैदिक धर्म का प्रचार करो। गुरू ने शिष्य के कन्धों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी रख दी थी। गुरू को पूर्ण विश्वास था कि इस जिम्मेदारी को वहन करने की उनके शिष्य दयानन्द में क्षमता और सामर्थ्य है। शिष्य ने नतमस्तक होकर गुरू की आज्ञा को स्वीकार किया और संसार रूपी अथाह समुद्र में अपनी जीवन रूपी नौका को डाल दिया। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्रों में अनेक महत्वपूर्ण सुधार आंदोलनों का सूत्रपात किया। मूर्तिपूजा के स्थान पर निराकार सर्वशक्तिमान ईश्वर का ध्यान, भक्ति और उपासना की पद्धति प्रचलित की। विभिन्न अवतारों के और देवी देवताओं के स्थान पर ऐकेश्वरवाद को प्रस्थापित किया। नाना प्रकार के धर्म ग्रन्थों के स्थान पर वेद और वेद सम्मत ऋषियों-मुनियों के ग्रन्थों की महत्ता और वेद प्रतिपादित वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया। महर्षि दयानन्द एक आदर्श समाज सुधारक थे। उनकी दृष्टि में सबसे आवश्यक लक्ष्य व्यक्ति का निर्माण था। उन्होंने १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की थी और उसके छठे नियम में संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य निर्धारित किया है। आर्य समाज के दस नियमों को दृष्टि में रखकर यह विदित होता है कि महर्षि का उद्देश्य यह था कि ईश्वर का स्वरूप सबकी समझ में आए। उन्होंने ईश्वर को पहले नियम में सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल बताया है, वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म बताया है। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में व्यक्तियों की उन्नति के लिए सबसे आवश्यक तत्त्व स्वाधीनता और स्वतन्त्रता है। वे यह जानते थे कि पराधीनता में न सुख है और न शान्ति है। स्वतन्त्रता के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति हर प्रकार की पराधीनता और दासता से मुक्त रहे। जब महर्षि ने कार्य आरम्भ किया था तब सारा भारत राजनीतिक दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। महर्षि को यह देखकर बड़ी वेदना होती थी और उन्होंने राजनीतिक दासता के निराकरण और स्वाधीनता प्राप्ति के लिए प्रबल रूप से प्रचार किया।

महर्षि ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग सबसे पहले सत्यार्थ प्रकाश में किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि स्वराज्य प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है। गुजरात की धरती पर टंकारा नामक ग्राम में उन्नीसवीं सदी में जिस दीपक का प्रादुर्भाव हुआ था उस दीपक ने अपने प्रकाश से संसार के गहनतम अन्धकार को दूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस महर्षि दयानन्द रूपी दीपक से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। टंकारा के एक शिवालय में शिवरात्रि को प्रज्जवलित वह दीपक स्वयं जला, अनेक बुझे हुए दीपकों को प्रज्जवलित किया और उसी शती के नवें चरण में पहुंचते-पहुंचते उस दीपक ने दीवाली के दिन ही अजमेर नगरी में शत-शत दीपकों को अपना आलोक दान कर, अपनी प्रभा से प्रभावित कर, अपने तेजपुंज से तेजस्विता प्रसारित कर, अपने अनुपम प्रकाश से प्रकाशित कर महाभियान का मार्ग अपनाया। महाप्रयाण का प्रवास प्रारम्भ किया।

महर्षि दयानन्द ने वेद का सन्देश देने के लिए अपने जीवन को अर्पित कर दिया। संसार के उपकार के लिए जिए और संसार के उपकार के लिए ही वह मर कर अमर हो गए तथा मरती हुई मानवता को अमरत्व का संदेश दे गए। वह क्रान्ति के पुञ्ज थे। साम्प्रदायिकता के दुर्भेद्य किलों को वैचारिक क्रान्ति से उन्होंने ध्वस्त किया। अज्ञानता एवं रूढ़िवाद के भंवर से मानव जाति का उन्होंने उद्धार किया। आँखे होते हुए भी ज्ञान दृष्टि के अभाव में मानव जाति भटक रही थी, महर्षि ने उसे ज्ञान दृष्टि रूपी दिव्य चक्षु प्रदान किए।

आर्य बन्धुओं हम प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाते हैं। इस वर्ष 14 नवम्बर 2020 को महर्षि दयानन्द का 137 वां निर्वाण दिवस मनाया जा रहा है। दीपावली का पर्व प्रत्येक वर्ष हमें ऋषि निर्वाण की याद दिलाता है। महर्षि दयानन्द को प्रतिवर्ष उनके निर्वाण दिवस पर याद करते हुए उनके द्वारा किये गए कार्यों को आगे बढ़ाएं, उनकी विचारधारा का जन-जन में प्रचार करें। ऋषि दयानन्द का निर्वाण नास्तिक गुरूदत्त के हृदय में आस्तिकता की ज्योति प्रज्जवलित कर गया। ऐसी पवित्र, पुण्य आत्मा को नमन करते हुए, उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए हम भी उस महान् आत्मा के पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लें।

क्रान्तिकारी समाज सुधारक-महर्षि दयानन्द

ले०—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत की पुण्यभूमि ने अनेकों ऐसे महापुरूष प्रदान किए हैं कि जिनके निरन्तर प्रयासों के फलस्वरूप भारत में राष्ट्रीयता की भावनाएं जागृत हो उठी और देश स्वतन्त्रता के पुनीत पथ पर आगे बढ़ा। ये सभी महापुरूष पुनर्जागरण के अग्रदूत थे, किन्तु राष्ट्रीयता का अग्रदूत होने का सौभाग्य केवल युगपुरूष महर्षि दयानन्द को प्राप्त हो सका। कारण यह कि राष्ट्रीयता का जो चित्रण महर्षि दयानन्द में उभरा वह किसी अन्य महापुरूष में दृष्टिगोचर नहीं होता। वे ही एक ऐसे महापुरूष थे जिसने सही अर्थों में राष्ट्रीयता की सजीव भावनाएं जागृत की थीं। अत: वही राष्ट्रीयता का अग्रदूत कहलाने का अधिकारी बन सके। एक क्रान्तिकारी समाज सुधारक एवं धर्म संशोधक होते हुए भी वे मूलत: राष्ट्रवादी थे। डा. गोविंद शर्मा के शब्दों में कि राष्ट्रीय चेतना, स्वतन्त्रता और ममता की भावना को जगाने का स्तुत्य प्रयत्न स्वामी दयानन्द द्वारा ही सम्भव हुआ। एनी बीसेंट ने उन्हें भारतवासियों के लिए स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोषक और स्वाधीनता संग्राम के गर्म दल के नेता श्री लोकमान्यतिलक उन्हें स्वाधीनता का प्रथम संदेशवाहक कहते हैं। वस्तुत: महर्षि दयानन्द सरस्वती जी राष्ट्रीयता के अग्रदूत तथा स्वतन्त्रता स्वदेशी आदि के मन्त्रदाता ऋषि थे। स्वराज्य, स्वतन्त्रता, स्वदेशी और स्वदेशाभिमान आदि की उत्कृष्ट भावनाएं भारतवर्ष में सर्वप्रथम उन्नीसवीं शताब्दी में उन्हीं के हृदय में उद्भूत हुई और उन्हीं ने ही सर्वप्रथम उनकी यथार्थ अभिव्यक्ति भी की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बहुत पहले ही महर्षि ने सच्चे स्वराज्य का स्वरूप प्रस्तुत कर दिया था। ऋषि दयानन्द के सभी उत्कृष्ट ग्रन्थ राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत हैं। सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य का पावन संदेश पढ़कर विश्व के प्रत्येक मानव के हृदय में स्वाधीनता की सहज अनुभूति हो सकती है।

वीर सावरकर जी ने कहा था कि यदि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य शब्द न लिखते तो आज स्वराज्य की पुकार न सुनाई देती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रशस्त मार्ग पर ही राष्ट्रीय क्रान्ति का रथ आगे बढ़ने में समर्थ हो सका एवं संस्कृति, स्वदेश और स्व इतिहास आदि के प्रति गौरव की जिस भावना का बीज वपन महर्षि ने किया था उसके फलस्वरूप देश में राष्ट्रीयता की भावनाएं जागृत हो सकी। इसलिए महर्षि दयानन्द नव राष्ट्र के मन्त्रदाता गुरू थे।

19वीं शती के पराधीन भारत में अन्धविश्वासों, पाखण्डों, तथा गुरूडमवाद ने लोगों को मानसिक रूप से दास बनाकर पशुवत् बना रखा था। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, वेद विरूद्ध नाना मत-मतान्तर, बाल विवाह, अज्ञानता, आचारहीनता आदि दोषों को महर्षि दयानन्द ने पराधीनता का कारण बताया है। महर्षि दयानन्द ने अनुभव किया कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का सामाजिक सुधार और वैदिक संस्कृति के पुनरूद्धार में कार्य कारण सम्बन्ध है। महर्षि दयानन्द ने इन सभी दोषों को दूर करने के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। दयानन्द के युगसंदेश में सोए हुए भारतवासियों को जगाया। सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार से लोग मानसिक दासता से मुक्त होने लगे। महर्षि दयानन्द के जीवन में धार्मिक उपदेशक, समाज सुधारक और राष्ट्रोद्धारक आदि सभी गुणों की विशेषता दिखाई देती है। स्वामी दयानन्द पूर्णत: धार्मिक महामानव थे। पूर्ण वैराग्य के साथ वे सामाजिक कल्याण के लिए वे समाज में रहे। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ उन्होंने समाज के लिए अनुपम तप-त्याग किया। संसार का उपकार करने के दृढ़ संकल्प से उन्होंने आर्य समाज की सथापना की और राष्ट्र को एकसूत्र में बाँधने का प्रयास किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने लोगों को पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों, कुरीतियों, के जाल से मुक्त कराया। उन्होंने मूर्ति पूजा का खण्ड़न करते हुए लोगों को बताया कि ईश्वर एक है जो सर्वव्यापक है, न्यायकारी, इस सृष्टि के कण-कण मे विद्यमान है और उसका मुख्य नाम ओ३म् है। महर्षि दयानन्द अपने देश की शिक्षा पद्धति परिवर्तन करना चाहते थे। उनका विचार था कि विद्य पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोष एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। महर्षि दयानन्द चाहते थे कि शिक्षा सभी को समान रूप से मिलनी चाहिए, चाहे वह किसी गरीब का बालक हो या किसी राजा का। महर्षि दयानन्द के लिए मानव जीवन का कोई पक्ष परकीय नहीं था। वे अपने देशवासियों का पूर्ण उद्धार करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द जी की भावना थी कि अपने देश के लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृभूमि से प्यार करें। महर्षि दयानन्द ने वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, यह बताकर सहस्रों वर्षो से अन्धकार में भटकते मानव के अन्त:करण के प्रसुप्त विवेक को जागृत किया।

महर्षि दयानन्द को भारतीय संस्कृति का पुनरूद्धारक कहा जा सकता है। महाभारत काल के पश्चात हमारी संस्कृति का पतन ही हुआ था। अनेकों कुरीतियों ने जन्म लिया था, धर्म का स्थान पाखण्ड़ और अन्धविश्वासों ने ले लिया था। वैदिक संस्कृति का ह्रास हो गया था। ऐसी विकट परिस्थितियों में युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने उस संस्कृति के पुनरूत्थान का बीड़ा उठाया, लोगों में नवजागरण का शंख फूंका और समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया। उन्होंने वैदिककालीन संस्कृति, इतिहास एवं परम्परा के आधार पर एक ऐसी जीवन दृष्टि प्रस्तुत की जो युगों-युगों तक न केवल भारतीय जन समाज अपितु समग्र विश्व को आलोकित एवं मार्गदर्शित करती रहेगी। उनके धर्म में निहित समाज रचना की परिकल्पना एवं मानव मूल्यों की अवधारणा देश काल अबाधित है। वे मुक्तात्मा थे। अनन्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त निराकार परमात्मा पर उनका पूर्ण विश्वास था।

दीपावली का यह महान् पर्व जिसे हम प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस के रूप में मनाते हैं। महर्षि दयानन्द जी सत्य धर्म के प्रतिपादक थे। वैदिक ज्ञान की ऊर्जा से प्रदीप्त वह अखण्ड़ ज्योति का पुञ्ज ब्रह्मचारी भारत तथा विश्व में व्याप्त रूढ़ियों, अज्ञानताओं, अन्धविश्वासों, तथा पाखण्ड़ों के विरूद्ध जयघोष करते हुए अग्र पथ प्रदर्शक के रूप में आए। दलितों, निर्धनों, तथा अशिक्षा से आक्रान्त महिलाओं के वह पथ प्रदर्शक बनें। जिस प्रकार दीपावली के दिन सहस्रों दीपकों की ज्योति से अन्धकार दूर हो जाता है उसी प्रकार हम भी महर्षि दयानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर, उनके गुणों को अपने जीवन के अन्दर धारण करके मानव जाति का पथ प्रदर्शक बनें।

प्रकाश का पर्व—दीपावली

ले०—श्री अशोक परुथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

दीपावली हमारा प्रकाश का पर्व है। जो कार्तिक वदी अमावस्या को मनाया जाता है। भारत के लोग इस अन्धकार से भरी हुई अमावस्या को प्रकाश में बदलने का भरसक प्रयास करते हैं। क्योंकि प्रकाश सभी को प्रिय है और प्रकाश में ही संसार के सभी पुण्य कार्य होते हैं। अन्धकार किसी को भी प्रिय नहीं है। तमसो मा ज्योतिर्गमय प्रभु हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो हम यह प्रार्थना करते हैं। क्योंकि सभी प्रकार के पापाचार अन्धकार में होते हैं। इसलिए इस पर्व के पीछे यही भावना काम करती है कि हम अन्धकार को कहीं न रहने दें। न वह हमारे मनों में रहे और न हमारे जीवन में रहे, न हमारे परिवार में रहे, न हमारे घर में रहे और न हमारे देश में रहे। अज्ञान रूपी अन्धकार मनुष्य की बुद्धि को मलिन कर देता है, उसके अन्दर स्वार्थ की भावना को भर देता है। स्वार्थी मनुष्य कभी भी समाज का हितैषी नहीं हो सकता। वह हर कार्य में अपना स्वार्थ देखता है। जब उसी व्यक्ति के मन में ज्ञान की ज्योति प्रज्जवलित हो जाती है तो उसके अन्दर की संकीर्ण भावनाएं समाप्त हो जाती हैं, वह अपने-पराये में कोई भेदभाव नहीं करता है। उसके लिए सम्पूर्ण प्राणीमात्र एक परिवार के समान दिखाई देता है। इसी प्रकाश की भावना को लेकर प्रतिवर्ष दीपावली का पर्व आता है। इस पर्व पर अगर मनुष्य बाहर के प्रकाश के साथ-साथ अपने अन्दर भी प्रकाश कर ले तो उसका कल्याण हो सकता है।

दीपावली के पर्व पर कई लोगों का विश्वास है कि इस दिन भगवान राम १४ वर्षों का वनवास काटकर तथा विजयदशमी के दिन रावण का वध करके उसके पश्चात दीपावली के दिन सीता व लक्ष्मण के साथ वापिस अयोध्या आये थे और उनके आने की प्रसन्नता में अयोध्या को दीपों से सजाया गया था और दीपमाला की गई थी। इसके बाद प्रतिवर्ष इस दिन यह पर्व अयोध्या में मनाया जाने लगा और इसके बाद सारे देश के लोग इसे मनाने लगे। परन्तु ऐसा ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध नहीं होता। न तो ऐसा सिद्ध होता है कि विजयदशमी के दिन रावण का वध हुआ हो और न ही यह सिद्ध होता है कि दीपावली के दिन श्रीराम अयोध्या आए हों। परन्तु फिर भी यह मान कर कि इस दिन भगवान राम रावण पर विजय पाकर अयोध्या लौटे थे और उनके आने पर दीपमालाएं की गई थी तो इससे भी हमें प्रेरणा मिलती है। राम ने आसुरी शक्ति का नाश करके धर्म की स्थापना की थी तो हमें भी इस दिन अपनी आसुरी वृत्तियों को निकाल कर अपने हृदय में ज्ञान का दीपक जला कर धर्म की स्थापना करनी चाहिए।

दीपावली के पर्व पर जहां हम भगवान राम को याद करते हैं वहां आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को भी याद करते हैं क्योंकि इसी ज्योति पर्व पर उन्होंने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था। यह ठीक है कि सन् १८८३ को दीपावली के दिन वे इस संसार से विदा हुए थे परन्तु उनका जो ज्ञान का दीपक जलाया हुआ था वह उसके बाद भी जलता रहा और आज भी सारे संसार को आलौकित कर रहा है। उन्होंने जो वेद ज्ञान संसार को दिया था वह अब सभी स्थानों पर फैल रहा है।

अपनी मृत्यु से आठ वर्ष पूर्व उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर दी थी और उनकी मृत्यु के समय तक अनेकों बड़े बड़े नगरों में आर्य समाजों की स्थापना हो चुकी थी। जहां महर्षि की मृत्यु हुई थी वहां पर परोपकारिणी सभा की स्थापना उनके काल में ही शुरू हो गई थी। महर्षि दयानन्द जी चारों वेदों का भाष्य करना चाहते थे परन्तु अपने जीवन काल में यजुर्वेद का भाष्य पूरा करके ऋग्वेद के सातवें मण्डल के कुछ सूक्तों का भाष्य कर पाये थे और जब उन्हें पता चला कि उन्हें जगन्नाथ के द्वारा विष दे दिया गया है तो उनके मुख से शब्द निकले थे कि जगन्नाथ तू नहीं जानता कि तूने कितना अनर्थ कार्य किया है। मेरा बहुत सा कार्य अभी अधूरा रह गया है। परन्तु फिर भी ऋषि को यह संतोष था कि जो ज्योति मैंने आर्य समाज के रूप में प्रज्वलित की है वह भारत में ही नहीं एक दिन सारे संसार में फैल जाएगी और मेरे अधूरे कार्य को आर्य समाज पूर्ण करेगा और यह सच्चाई भी है कि महर्षि के बाद चारों वेदों का भाष्य किया गया जो आज सभी स्थानों पर उपलब्ध है।

महर्षि दयानन्द योगी थे उन्होंने अपनी योगविद्या के आधार पर यह जान लिया था कि अब वह बहुत देर तक नहीं रह सकेंगे। इसलिए उन्होंने अपने निर्वाण से आठ वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना कर दी थी। ताकि उनके द्वारा आरम्भ किए गये कार्य निरन्तर चलते रहें। उनकी इच्छा थी कि सारे संसार में वेदों के प्रचार का कार्य, अनाथ रक्षण, अबला उद्धार, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा तथा लोकोपकार के कार्य निरन्तर चलते रहें। वेद ज्योति का प्रकाश घर घर पहुंचाना उनका उद्देश्य था। वेद के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। उन्होंने वेद की ज्योति को सारे संसार में फैला दिया । यह प्रकाश निरन्तर बढ़ता गया इसलिए उन्होंने अपने शरीर छोड़ने का समय भी ज्योति पर्व को चुना। ताकि इस पर्व को मनाते हुए लोग ज्योति के महत्व को समझें। इसके साथ ही वे यह भी कहते थे कि मेरी मृत्यु के शोक में लोग दुःखी न हों। बल्कि इस पर्व को मनाते हुए मेरे अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प लेते रहें।

आओ 14 नवम्बर को दीपावली के पर्व को मनाते हुए उस ज्योति स्तम्भ से ज्योति लेने का प्रयास करें ताकि हम महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा कर सकें और हम सभी मिलकर स्नेह का दीपक जलायें, श्रद्धा का दीपक जलायें, आपसी मतभेद व वैमनस्य दूर कर के आस्था व विश्वास का दीपक जलायें जिससे आर्य समाज की उन्नति हो। हम दूसरों के अवगुणों को न देखें। जो दूसरों के अवगुणों को देखता है वह दुरात्मा बन जाता है और जो दूसरों के सद्गुणों को देखता है वह धर्मात्मा बन जाता है। आओ इस ज्योति पर्व को मनाते हुए हम अपने अन्दर के बुरे विचारों को इस ज्योति में भस्म कर डालें। जिस महर्षि की दिव्य ज्योति से नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गया था उसी ज्योति को हृदय में धारण करते हुए हम अपने अन्दर के अन्धकार को दूर करें तभी इस ज्योति पर्व की सच्ची सार्थकता सिद्ध होगी।

उस रात की कीमत क्या होगी

ले०—श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

सन् 1883 की दीपावली की रात केवल आर्य समाज के लिए ही नहीं अपितु पूरे हिन्दू समाज के लिए एक काली रात थी क्योंकि इस रात को सम्पूर्ण विश्व को अपने ज्ञान के अलौकिक प्रकाश से प्रकाशित करने वाला सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया था। दीपावली की रात्रि के विषय में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए पं. चमूपति जी ने अपनी कविता में लिखा है कि-

ऐ दुनिया बता, इससे बढ़कर,
फिर और हकीकत क्या होगी।
जां दे दी तलाशे हक के लिए,
फिर और इबादत क्या होगी।
यूं तो हर रात की तारिकी,
देती है पयाम उजाले का।
जिससे यह जहां पुर नूर हुआ,
उस रात की कीमत क्या होगी।

पं. चमूपति जी की इन पंक्तियों को पढ़कर वास्तव में इस बात का बोध होता है कि महर्षि दयानन्द जी के जाने से समाज की कितनी हानि हुई है। महर्षि दयानन्द अगर कुछ समय और रहते तो वे अपने कई अधूरे कार्य पूरे कर जाते। उन अधूरे कार्यों में एक कार्य चारों वेदों का भाष्य पूरा करना था। महर्षि दयानन्द जी का मानना था कि अगर चारों वेदों का भाष्य पूरा हो जायेगा तो सूर्य से भी अधिक प्रकाश इस संसार में हो जायेगा। गौ रक्षा के लिए भी उन्होंने हस्ताक्षर अभियान चलाया हुआ था। अनेकों समाज सुधार के कार्यों की योजनाएं महर्षि दयानन्द ने बना रखी थी। इसलिए इस बात का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि उनके असमय देहान्त से आर्य समाज की कितनी हानि हुई है।

दीपावली की यह रात महर्षि दयानन्द के अनुयायियों के लिए विशेष स्थान रखती है। इस रात हमें प्रकाश दिखाने वाले तो चले गए। परन्तु अपने बलिदान से एक रास्ता दिखा गए और हम उसी रास्ते पर चल रहे हैं। जो रास्ता हमें महर्षि दयानन्द ने दिखाया है वही हमारे लिए कल्याण और मोक्ष का रास्ता हो सकता है। हमारा देश बहुत सौभाग्यशाली है जो समय समय पर यहां ऐसे महापुरूष होते रहे हैं जो हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाते रहे हैं। हम उन सबका सम्मान करते हैं। परन्तु महर्षि दयानन्द का अपना एक विशेष स्थान है। उन्होंने उस समय अपने देशवासियों में एक वैचारिक क्रान्ति पैदा की थी जबकि हम अपनी प्राचीन संस्कृति, मान्यताओं और परम्पराओं को बिल्कुल भूल गए थे। उन्होंने हमें केवल यही कहा था कि वेदों की ओर वापिस लौटो। वह समझते थे कि वेद ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और क्योंकि हम वेदों को भूल चुके थे इसलिए भटक रहे थे और दूसरे मत-मतान्तरों के अनुयायी हमें हड़प करने का प्रयास कर रहे थे। महर्षि के समकालीन और भी कई सुधारक हुए हैं परन्तु उनमें से कोई भी इतना प्रभाव नहीं छोड़ सका था जितना कि महर्षि दयानन्द ने छोड़ा था। महर्षि दयानन्द ही ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक तीनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया था। जहां कोई ऐसी भावना का प्रादुर्भाव होते देखते थे जिसे वह अपने देश और समाज के लिए हानिकारक समझते थे। वहां उसके विरूद्ध अपना झण्ड़ा खड़ा कर देते थे।

दीपावली का पर्व अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला पर्व है परन्तु जिस दीपावली की रात्रि को महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ था उस रात्रि को एक ऐसे प्रकाश का लोप हुआ था जिसने अपनी आभा से पूरे विश्व को आलौकित किया हुआ था। चारों ओर महर्षि दयानन्द रूपी दीपक का प्रकाश फैल रहा था। परन्तु कुछ लोगों के स्वार्थ के कारण वो दीपक असमय ही बुझ गया था। भौतिक प्रकाश के अभाव में मनुष्य का जीवन यापन सम्भव है परन्तु आध्यात्मिक प्रकाश के अभाव में कभी सम्भव नहीं है। महर्षि दयानन्द आध्यात्मिकता के पुंज थे। वे इस संसार से जाते-जाते भी नास्तिक गुरूदत्त को आस्तिक बना गए।

आज दीवाली भी है और महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस भी है। महर्षि दयानन्द एक नई क्रान्ति के अग्रदूत थे। जहां उन्होंने अपने देशवासियों को परतन्त्रता की जंजीरों को तोड़कर आजाद होने का पाठ पढ़ाया था वहां उन्होंने हमें यह भी कहा था कि वेद ही हमारे धर्म और संस्कृति का आधार हो सकते हैं। इसलिए उन्होंने आर्य समाज के दस नियमों में वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया। आज दीपावली के पर्व पर ऋषि का निर्वाण दिवस है हम इस दिन अपने महान् आचार्य के चरणों में अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए चिन्तन और मनन करें कि उनके जाने के बाद हमने आर्य समाज की उन्नति के लिए कितना कार्य किया है।

ऋषि दयानन्द की विद्या-शिक्षा प्रणाली

ले०—पं. मदन मोहन जी विद्यासागर वेदालंकार

समाज शास्त्रिओं ने मनुष्य देहधारी जीव को सामाजिक प्राणी सोशल एनिमल कहा है। हमारी दृष्टि में वह सीखने-सिखाने की योग्यता रखने वाला विशेष प्राणी है।

आर्य मनीषियों ने 'पंच वै पशव:' अर्थात् चराचर जगत् में मनुष्य पशु, पक्षी कृमि-कीटादि और वृक्ष वनस्पति' इस प्रकार से प्राणियों के पांच विभाग किए हैं। इन में मनुष्य नाम का पशु-प्राणी इन सब में श्रेष्ठ माना जाता है। अन्य प्राणियों से मनुष्य के श्रेष्ठ होने का कारण ज्ञान और धर्म माने गए हैं। धर्म के कारण उसमें सामाजिकता का विकास और ज्ञान के कारण उसकी चिन्तन शक्ति का विकास होता है।

पांचों प्रकार के प्राणियों में सृष्टि के पदार्थों से अपने अनुकूल शक्ति-तत्वों के ग्रहण और शरीर में से प्रतिकूल के विसर्जन की सहज प्रवृत्ति होती है। यह क्रिया मुख्यत: भौतिक या शारीरिक होती है। उसके साथ मनुष्य, पशु, पक्षी, कृमि, कीटादि इन में एक बुद्धि भी होती है। जिससे वे अपने अनुकूल-प्रतिकूल का ग्रहण परित्याग करते रहते हैं। मात्रा भेद से यह किसी में कम और किसी में ज्यादा भी होती है।

इन पांचों में जो मनुष्य है, उस में दो प्रकार के ज्ञान की शक्ति होती है, स्वाभाविक और नैमित्तिक। स्वाभाविक ज्ञान से उसकी आहार निद्रा-भय-मैथुन की क्रियायें सहज ढंग से चल सकती हैं। परन्तु मनुष्य इतने में सन्तुष्ट नहीं रहता, क्योंकि उसके अन्दर धर्म और ज्ञान दोनों की प्रवृति छिपी है। इसलिए वह अपने ज्ञान का विस्तार चाहता है। यह अपने ज्ञान के विस्तार की इच्छा ही उसे कुछ सीखने सिखाने में सदा प्रवृत करती है। आज की परिभाषा में इसका नाम विद्याविधान या शिक्षा प्रणाली है, जिस में सीखने सिखाने की परम्परा निरन्तर चलती रहती है। मनुष्य किसी के द्वारा सिखाए बिना कुछ जान नहीं सकता और सीखने पर दूसरे को सिखाए बिना रह नहीं सकता।

इस सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का वैज्ञानिक आधुनिक नाम शिक्षा प्रणाली है।

ऋषि दयानन्द परम वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टा युगान्तरकारी पुरुष थे। वे मानव जाति को त्रस्त करने वाले एवं अज्ञानगर्त में ढकेलने वाले मतमतान्तरों को मिटाकर एक मानव धर्म की स्थापना करना चाहते थे। अविद्या का नाश कर विद्या की अभिवृद्धि करना, ऐसा नियम उन्होंने बनाया है। इसलिए उन्होंने नए सिरे से मानव के निर्माण की एक बुद्धि सम्मत योजना बनाई। उस योजना में शिक्षा प्रणाली पर भी उत्तम विचार किए हैं। उन पर क्रमश: विचार करते हैं:-

1-पहला सिद्धान्त है, इसमें विद्या और शिक्षा दो भेद करना। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में 2 और 3 समुल्लासों में इन पर पृथक्-पृथक् विचार किया है। उनके विचार में शिक्षा से मनुष्य धर्मात्मा और विद्या से विद्वान बनता है। मनुष्य को अपने पूर्ण विकास के लिए धर्मात्मा और विद्वान दोनों ही होना चाहिए।

द्वितीय समुल्लास में शिक्षा के विषय में ऋषि ने विचार किया है। इससे ऋषि का अभिप्राय: सदाचार नीति के सिखाने से है। यह पठन-पाठन के बिना भी कुछ सीमा तक दी जा सकती है।

ऋषि लिखते हैं-वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षा अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य (पूर्णत: सच्चा) ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य। वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्। जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हो। (द्वितीय समुल्लास)

इसमें भी जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है, उतना किसी से नहीं। (द्वितीय समुल्लास) ऐसा ऋषि ने बताया है। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे। जिससे सन्तान सभ्य हो और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावे। जब (शिशु) बोलने लगे। तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके। वैसा उपाय करें....। जब वह कुछ बोलने और समझने लगे, तब सुन्दर वाणी और बड़े छोटे, मान्य, माता-पिता, राजा विद्वान् आदि से भाषण करना, (वैसा) उनसे वर्तमान (कैसे वर्तना चाहिए वैसा विचार) और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें। जिससे कहीं उन (सन्तानों) का अयोग्य व्यवहार न होवे। सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय विद्या प्रिय और सत्संग में रुचि करें। वैसा प्रयत्न करते रहें। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या द्वेषादि न करें। सदा सत्य भाषण शौर्य धैर्य प्रसन्न वदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो, (वैसा) करावें। (द्वितीय समु.)

जैसी (ऊपर) अन्य विषयों की शिक्षा की है, वैसी चोरी जारी आलस्य प्रमाद मादक द्रव्य मिथ्या भाषण हिंसा क्रूरता ईर्ष्या द्वेष मोह आदि दोषों के छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा भी करें। (द्वितीय समुल्लास)

ऊपर लिखी बातें सिखाने से प्रत्येक बालक आचारवान बन सकेगा। उसमें उच्च उदात्त मानवीय गुणों का विकास होगा। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में माता-पिता बालक को, कुछ नीति की बात सिखावें, न इसका इसमें स्थान है और न इस बात की गुंजाईश ही है कि उनके अन्दर उत्तम गुणों का विकास कराया जावे। 3-4-5 वर्ष की उम्र में बच्चों को स्कूल में भेजने की व्यवस्था तो जरुर है। जहां भेजने का मुख्य उद्देश्य बच्चों का मन पढ़ाई में लगने का अभ्यास कराने का होता है या फिर उनको सम्भालने के श्रम से बचना होता है। परिणामत: सन्तानों में उत्तम माननीय गुणों का विकास नहीं हो पाता।

ऋषि दयानन्द के विचार में यह आधारशिला है जिनके ऊपर विद्या की दृढ़ दीवार उठती है। विद्या में मुख्यत: पठन-पाठन व अध्ययन अध्यापन का विषय आता है, जिसका वर्णन तृतीय समुल्लास में तथा अन्य ग्रन्थों में भी ऋषि ने स्पष्ट व विस्तार से किया है। इस अध्ययन अध्यापन प्रणाली में भी कौन से विषय पढ़ाए जावें। कौन से नहीं, इसका दिग्दर्शन

भी अत्युत्तमता से ऋषि ने इस का उद्देश्य भी बालकों में सदाचार ही बताया है। ऐसे ग्रन्थ नहीं पढ़ाए जाने चाहिए। जिनसे मनोविकार पैदा हों। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस ओर न के समान ध्यान है।

2-दूसरा सिद्धान्त है ज्ञान की परम्परा को अनादि अनन्त मानना वर्तमान शिक्षाविद ज्ञान व विद्या की वृद्धि परम्परा से होती है। ऐसा तो मानते हैं, परन्तु इस का विकास मनुष्य ने स्वयं किया होगा ऐसा प्रतिपादन करते हैं। ऋषि दयानन्द का विचार है-जो परमेश्वर है, वह सनातन जीव रूप प्रजा के कल्याणार्थ यथावत रीतिपूर्वक वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेश (सृष्टि के आदि) में करता है। (सप्तम् समुल्लास) अर्थात् जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है (सप्तम् समु.)

क्रमश: ज्ञान बढ़ाते जाकर पश्चात् पुस्तक भी बना लेंगे (सप्तम् समुल्लास) अर्थात् नाना विद्याओं का विकास कर लेंगे इसका खण्डन करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि-जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान् नहीं होते जब उनको कोई शिक्षक मिल जाए, तो (उससे विद्या प्राप्त कर) विद्वान हो जाते हैं और अब भी किसी से पढ़े बिना कोई भी विद्वान् नहीं होता। इस प्रकार जो (यदि) परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते, तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते। जैसे कोई बालक को जन्म से एकान्त देश में अविद्वानों व पशुओं के संग में रख देवें। तो वह जैसा संग है, वैसा ही हो जावेगा। उसका दृष्टान्त जंगली भील आदि (लोग) हैं। जब तक आर्यवर्त देश से शिक्षा (व ज्ञान की ज्योति) नहीं गई थी। तब तक मिस्र युनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या विकसित नहीं हुई थी और इंग्लैंड के कुलम्बस आदि पुरुष अमेरिका में जब तक नहीं गए थे, तब तक वे (वे अमेरिका वासी) भी सहस्रों लाखों करोड़ों वर्षों से मूर्ख अर्थात् विद्याहीन थे। पुन: सुशिक्षा के पाने से विद्वान् हो गए हैं, वैसे ही परमात्मा से सृष्टि के आदि में विद्या शिक्षा की प्राप्ति से उत्तरोत्तर काल में विद्वान होते आए हैं। जैसे वर्तमान समय में हम लोग अध्यापकों से पढ़ के ही विद्वान होते हैं वैसे परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुए अग्नि आदि ऋषियों का गुरु अर्थात पढ़ाने हारा है। (सप्तम् समुल्लास)

ऋषि दयानन्द के विचार में सृष्टि के आदि से चली यह ज्ञान परम्परा महाभारत काल तक बहुत कुछ चलती रही। फिर आर्यों के प्रमाद व स्वार्थ से नष्ट हो गई। (स-10वां-11वां समुल्लास)।

3-वर्तमान काल में शिक्षण या विद्या के क्षेत्र में केवल अध्यापक का ही महत्त्व है। परन्तु ऋषि की दृष्टि में वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता और दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है सप्तम् समुल्लास। सन्तानों को उत्तम विद्या शिक्षा गुण कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता पिता आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्त्तव्य है (तृतीय समुल्लास) साथ ही माता पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें कि जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं, उनका ग्रहण करें और जो जो दुष्टकर्म हों उनका त्याग कर दिया करो जो जो सत्य जाने उन उन का प्रकाश और प्रचार करें। और जिस जिस उत्तम कर्म के लिए माता पिता और आचार्य आज्ञा देवें, उस उसका ही पालन करें। (द्वितीय समुल्लास)

इसी प्रकार यथायोग्य सब अक्षरों का (सही) उच्चारण भी माता पिता आचार्य सिखलावे (2 समु.) अध्यापक गुरु के साथ माता पिता का भी शिक्षा व्यवस्था में महत्व बताना यह ऋषि की देन वर्तमान शिक्षा प्रणाली को है। ऋषि लिखते हैं-वह माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं, जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई... यही माता पिता का कर्त्तव्य कर्म परम धर्म और कीर्ति का काम है। जो अपने सन्तानों को तन, मन धन से विद्या, धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना (2-समुल्लास)।

4-शिक्षा विद्या का प्रारम्भ किस वय से हो उस समय का निर्देश भी ऋषि ने कर दिया है। अर्थात् जन्म से 5 वर्ष तक बालकों को माता 6वें वर्ष के आरम्भ से आचार्य कुल में गुरुकुल में भेजें (2 स,) अर्थात् पांच वर्ष के हों, तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में भेज देवें (3-स.) वहां समावर्तन संस्कार अर्थात् शिक्षा प्रणाली पूर्ण होने तक रहें।

5-पाचवां सिद्धान्त ऋषि का शिक्षा के प्रारम्भ काल के सम्बन्ध में है। वर्तमान शिक्षा शास्त्री 3-4 वर्ष की आयु से ही बालक की शिक्षा का प्रारम्भ मानते हैं। परन्तु ऋषि दयानन्द गर्भावस्था से मनुष्य का शिक्षणकाल मानते हैं। ऋषि लिखते हैं-धन्य वह माता है जो गर्भाधान से लेकर जब तक सुशीलता का उपदेश करे (2-स.)

माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य मद्य दुर्गन्ध रुक्ष बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ के जो शान्ति आरोग्य बल बुद्धि पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करें (करावें) वैसे घृत दुग्ध मिष्ट अन्न पान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रजवीर्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हो (2-स)

इस प्रकार जो स्त्री व पुरुष करेंगे उनके सब सन्तान उत्तम बल पराक्रम युक्त दीर्घायु धार्मिक होते रहेंगे। (2-स)

6-इस प्रकार के संस्कारी बालक गर्भ में आने से पूर्व जिनके माता पिता सदाचार सम्पन्न होते हैं, और पांच वर्ष तक जिनको विशेषत: उनकी माता सामान्यत: माता पिता दोनों ने मानवीय गुणों का विकास करने वाली अच्छी अच्छी बातों की शिक्षा दी है, उनका विद्याभ्यास किस भाषा में हो यह प्रश्न है। भारत देश के बुद्धिमानों को छोड़ सब का एक मत से यह सिद्धान्त है कि मातृ भाषा में शिक्षण प्रारम्भ होना चाहिए।

इस विषय में ऋषि दयानन्द का मत है कि-जब पांच वर्ष के लड़का लड़की हों, तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों को भी सिखावें (2-स.)

ऐसा ऋषि ने क्यों लिखा ? इसका कारण यह है कि ऋषि दयानन्द की दृष्टि में मानव जाति एक है। इसलिए मानवों की मातृ भाषा से बच्चों का शिक्षण आरम्भ होना चाहिए। वह सब की मातृ भाषा संस्कृत ही है। जिस की लिपि देवनागरी है। ऋषि स्पष्ट लिखते हैं-

प्रशन-किसी देश की भाषा में वेदों का प्रकाश न करके (परमात्मा ने) संस्कृत में क्यों किया ?

उत्तर-जो किसी देश भाषा में करता, तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता इसलिए संस्कृत में ही प्रकाश किया, जो किसी देश (जाति व वर्ग विशेष) की भाषा नहीं। और वेद भाषा (अर्थात यह संस्कृत भाषा) सब भाषाओं का कारण है। जैसे ईश्वर की पृथिवी आदि सृष्टि सब देश और देश वालों के लिए एक सी है, वैसे परमेश्वर की विद्या की भाषा भी मानव

मात्र के लिए) एक सी होनी चाहिए कि सब देश वालों की पढ़ने पढ़ाने में तुल्य परिश्रम होने से ईश्वर पक्षपाती नहीं होता। और सब भाषाओं का मूल कारण भी यही संस्कृत भाषा है। (7-समुल्लास)

यदि विश्व के सब शिक्षा शास्त्री इस यथार्थ को निष्पक्ष हो स्वीकार कर लें और तदनुसार अपने देश के बालकों को, उनकी मातृभाषा संस्कृत पढ़ाने के निमित्त देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करायें तो विश्व के राष्ट्रों की एकता हो जावे।

देवनागरी लिपि ही क्यों? इसलिए की यही सब लिपियों में अधिक वैज्ञानिक और सब ध्वनियों की प्रकाशक है।

इतना करके फिर अपने अपने देशों में प्रचलित जो अन्य भाषायें हैं, उनके अक्षरों का अभ्यास भी करावें। यह ऋषि का द्विभाषा का फार्मूला विश्व में एकता लाने का अचूक सुझाव है।

साथ ही उसके पश्चात् अच्छी शिक्षा विद्या धर्म परमेश्वर माता, पिता आचार्य विद्वान अतिथि राजा प्रजा कुटुम्ब बन्धु भगिनी भृत्य आदि से कैसे कैसे वर्तना, इन बातों के मन्त्र श्लोक सूत्र गद्य पद्य भी अर्थ सहित कठस्थ करावें (2-स.)

विश्व भर के माता पिता अपने मत सम्प्रदाय के ग्रन्थों को पढ़ाने के बजाए यदि इस प्रकार का प्रारम्भिक शिक्षण अपने अपने सन्तानों को करें, तो निसन्देह विश्व नागरिकता का आसानी से विकास हो जावे।

साथ ही सबसे पूर्व पिता माता व अध्यापक अपने लड़के लड़कियों (व शिष्यों) को अर्थ सहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर दें (3-स.) यह मन्त्र बुद्धि की प्रार्थना का मन्त्र है। इसका उपदेश सब को होना ही चाहिए। यह हिन्दुओं का ही पवित्र मन्त्र है, ऐसा समझना ठीक नहीं।

इस प्रकार शिक्षण होने से सम्प्रदायों व मत मतान्तरों का स्वत: ही लोप हो जावेगा, जोकि मानव जाति की उन्नति व एकता में सब से बड़े बाधक बने हुए हैं।

साथ ही शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी बालकों को कराया जाना चाहिए (2-स.) व द्र. वर्णोंच्चारण शिक्षा पद्धति वर्तमान शिक्षण प्रणाली में शुद्धोच्चारण तथा शुद्ध सुलेखन की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

7-वर्तमान शिक्षण प्रणाली में शारीरिक दण्ड या ताड़न का निषेध है। परन्तु ऋषि दयानन्द ताड़न का महत्व मानते हैं। ऋषि लिखते हैं। उन्हीं की सन्तान विद्वान सभ्य और सुशिक्षित होती हैं, जो पढ़ाने में सन्तानों को लाड कभी नहीं करते, किन्तु ताड़ना करते हैं। जो माता-पिता आचार्य सन्तान और शिष्यों को (विद्याभ्यास के समय) ताड़ना करते हैं वे जानों अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों व शिष्यों का लाड़न ही करते हैं वह अपनी सन्तान व शिष्यों को (मानो) विष पिला के भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से सन्तान और शिष्य दोष युक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं, और सन्तान और शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें। परन्तु माता पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या द्वेष (व क्रोध) से ताड़न कभी न करें। किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें। (2-स.)

8-आठवां ऋषि का सिद्धान्त है कि सहशिक्षण उचित नहीं। इससे दुराचार असंयम की पूर्ण वृद्धि होने से सन्तान विद्या युक्त व धार्मिक नहीं बन सकेंगे। ऋषि लिखते हैं-नौवें वर्ष के आरम्भ में द्विज (अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य) अपनी-सन्तानों को उपनयन करा के आचार्य कुल में अर्थात् जहां पूर्ण विद्वान और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्या दान करने वाली हों, वहां लड़के और लड़कियों को भेज दें। (द्वितीय तथा तृतीय स.) लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिये। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरुष भृत्य अनुचार हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री, पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावें (3-स.)

9-नवम् सिद्धान्त गुरुकुल शिक्षण पद्धति का है। जिसके अनुसार प्रथम विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए। अर्थात् पाठशालाओं से एक योजन अर्थात चार कोस दूर ग्राम व नगर रहे। (3-स.)

दूसरे जहां पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्या दान करने वाली हो। वहां विद्याभ्यास के लिए (सब वर्णों वाले अपने अपने सन्तान को) गुरुकुल में भेज दें। (2-स.) जो अध्यापक पुरुष व स्त्री दुष्टाचारी हों, उनसे शिक्षा न दिलावें। किन्तु जो पूर्ण विद्या युक्त धार्मिक हों, वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य (होते) हैं। (तृतीय समु.)

वर्तमान विद्या विधान में अध्यापकों की नियुक्ति का मापदण्ड उनकी विद्या सम्बन्धी प्राप्त की उपलब्धियां मात्र हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन की तरफ सर्वथा उपेक्षा है। इसीलिए संस्थाओं में सिगरेटबाज मांसाहारी मद्यपी जनों की भरमार है। चरित्र बने, तो कैसे बने ?

ऋषिवर प्यारा

ले०-श्री वीरेन्द्र-कुलदीप शर्मा

आर्य समाज बनाके ऋषि ने, दूर किया अंधियारा।
क्या गायें हम ऋषि की महिमा, देव गुरु वो प्यारा।।
सबका प्यारा, ऋषिवर प्यारा..........।
मथुरा नगरी में वेदों का, मूल ने ज्ञान था पाया।
गुरु विरजानन्द के चरणों में, अपना शीश निवाया।।
अपना शीश निवाया, योगी बन दिखलाया।
वेदों के प्रचार की खातिर, घूमा भारत सारा।
सब का प्यारा, ऋषिवर प्यारा..........।
भारत में था पाखंडियों ने, भारी जाल बिछाया।
दूर किया भ्रमजाल ऋषि ने, सब को समान बनाया।
सब को समान बनाया, वैदिक ध्वज लहराया।
पाखंडियों के पोल खोल कर, दिया ओ३म् का नारा।
सब का प्यारा, ऋषिवर प्यारा..........।
ईंटे पत्थर खाए ऋषि ने, फिर भी न घबराया।
आप जहर का पान किया पर, अमृत हमें पिलाया।
अमृत पिलाया, सच्चा राह दिखलाया।
आया था उपकार ही करने देव गुरु वह प्यारा
सब का प्यारा, ऋषिवर प्यारा..........।
केवल इक ही दीपक ने थे, लाखों दीप जलाए
धर्म जाति और देश की खातिर, अपने प्राण गंवाए।
अपने प्राण गंवाए, हम बलिहारी जाए।
दुनिया भर का सच्चा 'साथी' देव गुरु था प्यारा।
सब का प्यारा, ऋषिवर प्यारा..........।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले०—श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी आर्य कुटिया धूरी

भारत की पुण्य भूमि पर अनेक सन्त महात्मा ज्ञानी एवं ऋषि हुए हैं, परन्तु उन सब का उपदेश या प्रेरणा एक अंगी रही है। महर्षि जी ने ''उपकार'' की परिभाषा आर्य समाज के छठे नियम में लिखी, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। अखण्ड ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द जी सरस्वती जब अपने गुरु ब्रह्मर्षि दण्डी स्वामी विरजानन्द जी महाराज से राष्ट्र जागरण की प्रेरणा ले कर बड़े ही उमंग और तरंग के साथ ''राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहित'' की भावनाओं को समक्ष रख कर राष्ट्र पिता बन कर कर्म क्षेत्र में उतरे, तो एक साथ स्वधर्म, स्वभाषा, स्व-संस्कृति एवं स्वराज्य का शंखनाद करके उद्‌बोधन किया था, तथा समूचे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए अपने सभी ग्रन्थ (संस्कृत एवं गुजराती के विद्वान होते हुए भी) आर्य भाषा ''हिन्दी'' में लिखे थे।

धार्मिक जागरण एक अद्‌भुत ''कमाल''

ईश्वर कण-कण में व्यापक है '' वास्यमिदं सर्व'' यजुर्वेद 40.1) में कहा गया है और उसका नाम ओ३म् है ''ओ३म् खं ब्रह्म, यजुर्वेद 40.1) में घोषित किया गया है, तथा सभी ऋषियों विद्वानों भक्तों, गुरुओं और भगवानों द्वारा माना गया है, लोगों ने गो-स्वामी तुलसी दास जी से पूछा कि जो भगवान कण कण में व्यापक है उसके बारे आप क्या कहते हैं ? उन्होंने ''ओ३म्'' जो निराकार सत्ता है उसके बारे कहा

विनु पद चलै सुनै विनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।।

अर्थात् भगवान बिना पांव के चलते हैं, बिना कानों के सुनते हैं बिना हाथों के सृष्टि रचते हैं। इसी भाव को ही लोग दैनिक आरती में गाते हैं ''तुम हो एक अगोचर सबके प्राण प्रति'' दृष्टि गोचर जो आंखों से देखा जा सके, जो न देखा जा सके अर्थात् निराकार सो अ+गोचर =अगोचर। जब अर्जुन ने भी भगवान कृष्ण से कण-कण में व्यापक सत्ता का नाम पूछा, तो भगवान कृष्ण बोले ''ओ३म् इति अक्षरं ब्रह्म, गीता 8-13'' और फिर पूछा ? जाप किस नाम से करूं ? बोले ''ओ३म्'' का जाप, गीता 17-24 जब पूछा कहां अनुभूति होगी तो भगवान कृष्ण बोले ''ईश्वर सर्व भूतानाम् हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति, गीता 18.61'' अर्थात हृदय में ही अनुभूति होगी। लोगों ने गुरु नानक देव जी से पूछा उस व्यापक सत्ता का नाम क्या है ? गुरु नानक देव जी बोले, ''एक ओंकार सतनाम कर्त्ता पुरुष'' उसका नाम ओ३म् और सृष्टि का रचयिता है लोगों ने ईसाइयों से पूछा, भगवान का नाम क्या हैं ? बोले हमने एक वेद के विद्वान से पूछा था कि आपने भगवान का नाम जो वेद के आधार पर ओ३म् रखा, उसका अर्थ क्या है ? उन्होंने बतलाया कि अ० उ० म् से ओ३म् शब्द बनता है, इसका अर्थ क्रमश: निर्माण गति और संहार करने वाला बताया, तथा कई लोग ब्रह्मा, विष्णु और महेश अर्थ से भी समझाते हैं, गीता में इसीलिये कहा गया है कि ब्रह्मा विष्णु, महेश एक ही ईश्वर के तीन नाम हैं, गीता 13,16'' अत: हमने भी भगवान का नाम ओ३म् के आधार पर God रखा है G से generator (उत्पादक) O से operator या organiger (गति देने वाला) D से Destroyer (संहार करने वाला) इतना लिखना ही पर्याप्त है, क्योंकि उपनिषदों तथा अन्य उदाहरण और लिखूं तो पढ़ना भी कठिन हो जायेगा। आप विचारियों इतने प्रमाण होते हुए भी लोगों ने भगवान कैद कर रखा है-मैं पुरी में भगवान जगन्नाथ जी के मन्दिर गया, मैंने कहा दर्शन करने हैं, कहने लगे भगवान दातुन कर रहे हैं, दूसरे मन्दिरों में गया मैंने मन्दिर देखना है कहने लगे भगवान भोजन कर रहे हैं, एक रानी जी के मन्दिर की बड़ी प्रशंसा सुनी, मैं देखने गया पुजारी बोला भगवान विश्राम कर रहे हैं। कहने का भाव यह, कि कहीं भगवान को सर्दी लग रहीं है और कहीं गर्मी, अत: मूर्तियों के ऊपर पंखे भी लग गये हैं। कितनी बिडम्बना है, व्यापक सत्ता का उपहास है। वाईबल में एक स्थान पर लिखा है-कि भगवान ने भगवान को अपने जैसा बनाया, फिर कम्पीटिशन करवाया, जैनियों ने कहा, हमारा भगवान यह है, दूसरा बोला वाह। आपका भगवान तो दो हाथ वाला है परन्तु हमारा भगवान चार हाथ वाला है, हमारा भगवान बहुत बड़ा है तीसरा बोला क्योंकि वैकुण्ठ लोक में रहता है, चौथा बोला हमारा भगवान क्षीर सागर में रहता है, हमारा बड़ा है, ईसाई बोले हमारा बड़ा है क्योंकि चौथे लोक में रहता है, मौलवी जी बोले वाह जी वाह हमारा भगवान सातवें आसमान लोक में रहता है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इस कम्पीटिशन में भाग नहीं लिया, अपितु ''ललकारा'' कि जो सत्ता सृष्टि कर्त्ता है वह व्यापक ही हो सकती है, ''जो ऊपर हो नीचे न हो वह भगवान नहीं हो सकता। जो निराकार हो वही व्यापक हो सकता है, निराकार पदार्थ कभी भी साकार नहीं हो सकता। यह कहते ही सभी भगवान धड़ाम से नीचे गिर पड़े। ऋषि जी ने इतना बड़ा चक्रव्यूह तोड़ कर कमाल कर दिया, तथा संसार को ईश्वर की पूजा वह भी ओ३म् नाम से वेद के आधार पर बतलाई, समझाई और सिखलाई

सामाजिक जागरण

पाखण्डों एवं कुप्रथाओं की जकड़न ने देश का बहुत बुरा हाल कर रखा था, जैसे सती प्रथा, कहीं बाल विवाह, कहीं बहुविवाह, कहीं अनमेल विवाह की बीमारी थी। कहीं पर अनाथ और विधवायें त्राहिमाम 2 कर रही थीं कहीं पर अछूत की बीमारी थी कहीं कर्त्तव्य हीनता

''वही होगा जो राम रच राखा।'' जितनी इच्छा हो पाप करो, तीर्थों में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं ऐसे प्रचार से पाप बढ़ रहे थे, और नरक और स्वर्ग को तो अलग लोक मान लिया गया था जो कि मनुष्य की एक अवस्था का नाम है। कहीं शिव के पुजारियों को भांग, भैरों के पुजारी को शराब, काली कलकत्ते वाली के पुजारी को मानो मांस खाने का लाईसैंस मिला हुआ था–नारी जाति का अत्यन्त शोषण तथा मृतक श्राद्ध जैसी अनेक बीमारियों का निराकरण करने हेतु शास्त्रार्थ का बिगुल बजा दिया। काशी में इस लिए शास्त्रार्थ करने को ललकारा, कि जहां से यह बीमारियां चलती हैं, वहीं इसका ईलाज हो सकता है। एक ओर 27 पण्डित पालकियों में गाजे बाजों के साथ पधारे तथा सारे नागरिक और काशी नरेश भी जिनके साथ हैं, दूसरी ओर केवल ईश्वर विश्वासी आत्म विश्वासी महर्षि दयानन्द सरस्वती अकेले ही निर्भय हो कर सबको ललकार रहे हैं, ऋषि की सच्ची ''टंकार'' ने सब को हिला दिया और मना दिया था। किसी ने इसीलिए तो लिखा था–

दयानन्द की बातों को कोई
जवां (जिह्वा) पर लाये न लाये।
मगर दिल से सब मान चुके हैं
ऋषिवर ने जो उपकार कमाये।।

स्वराज्य उद्‌बोधन

महर्षि दयानन्द जी ने देश की परतन्त्रता के कारण गरीबी और आत्महीनता की अवस्था को देख कर ''स्वराज्य'' शब्द राष्ट्र को दिया, जिससे देश ने अंगड़ाई ली। कहते हैं कि एक बार महात्मा गान्धी से किसी ने पूछा, आपके गुरु कौन हैं ? गान्धी जी बोले ''गोखले जी'', फिर गोखले जी से पूछा गया, आपके गुरु कौन हैं ? बोले महादेव रानाडे, फिर रानाडे जी से पूछा गया आपके गुरु कौन है ? रानाडे जी बोले, ''महर्षि दयानन्द सरस्वती''। क्योंकि महर्षि दयानन्द राष्ट्र पिता थे, अतः उन्होंने देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए पहले-पहले वहीं आर्य समाजों की स्थापना की, जहां-जहां अंग्रेजों ने मिल्ट्री की छावनियां बना रखी थीं, ताकि मिल्ट्री में ''स्वदेश प्रेम'' की भावना जगाकर विद्रोह करवाया जा सके। कौन नहीं जानता ? कि आर्य समाज के गुरुकुलों ने, डी०ए०वी० कालेजों ने तथा आर्य स्कूलों ने देश को देश-भक्तों की फौज दी है, अतः स्वतन्त्रता आन्दोलन के कांग्रेस के इतिहास में आप पढ़ेंगे कि आन्दोलन में भाग लेने वाले 80% आर्य समाजी थे, उन सब के नाम लिखना मेरे लिए न सम्भव है और न आवश्यक। हां इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह भी है कि आर्य समाज के उत्सवों में ''राष्ट्र रक्षा सम्मेलन'' होते थे और अब भी होते हैं।

सांस्कृतिक जागरण

कौन है जो नहीं जानता कि किसी भी देश पर तीन प्रकार से आक्रमण हो सकता है, भाषा पर, भूमि पर और संस्कृति पर। इस समय हमारे देश पर तीनों आक्रमण हुए हैं, भाषा पर तो सरकार की ओर से है, इतने वर्षों से स्वतन्त्र होने के बाद भी राष्ट्र भाषा ''हिन्दी'' को प्राथमिकता नहीं दी गई। अंग्रेजों को अंग्रेजी का भूत सवार है इसीलिए राष्ट्र एक सूत्र में नहीं पिरोया जा सकता, भाषा पर आक्रमण का सीधा प्रभाव संस्कृति पर पड़ता है, ''संस्कृति राष्ट्र की आत्मा होती है'' जो अधिक संस्कृत में है, जिसे सरकार देश निकाला करना चाहती है, परन्तु महर्षि व आर्य समाज के गुरुकुलों एवं विद्यालयों ने इसे जीवित रखा है।

कहीं पर ऋषि एवं देवताओं को कामी बताया जाता था। महर्षि ने ब्रह्मचर्य की महिमा बताते हुए कहा, भगवान की उपासना ''ब्रह्मचारी ही कर सकता है व्यभिचारी नहीं'' अतः ऋषि जी ने ब्रह्मचर्य के तप एवं बल द्वारा चमत्कार किए। कहीं पर यज्ञों में हिंसा होती थी। ऋषि ने फटकारा और कहा कि वेद के ऋषि गाय, कुत्ता, कौआ, चींटी आदि को भी भोजन दिये बिना, न खाने का उपदेश देने वाले ऐसे कुकृत्य को कभी नहीं कर सकते थे।

गौ की रक्षार्थ अंग्रेज सरकार को करोड़ों व्यक्तियों के हस्ताक्षर करवा कर भेजे तथा सभी लोग गाय का दूध पी सके, गाय नस्ल में सुधार हो सके, और वृद्ध गायों का पालन हो सके, इसी लक्ष्य को समक्ष रख कर महर्षि दयानन्द जी ने भारत में पहली बार सन् 1877 में रिवाड़ी में गौशाला खोल कर गौशालाओं के खोलने का संकेत दिया, इसीलिए सभी गुरुकुलों में ''गौशालाएं'' होती हैं। गौ माता पर ''गौ करुणानिधि'' पुस्तक लिखकर गाय की महिमा तथा शारीरिक एवं आर्थिक लाभ का दिग्दर्शन करवाया।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से (शुद्ध) पुनर्मिलन आन्दोलन को जन्म दिया ताकि सभी बिखरे, बिछुड़े और पिछड़े लोग सब मिलकर ''ओ३म्'' के झण्डे के नीचे आकार ऊंचे स्वर से ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का जय घोष करें और मानव निर्माण हेतु वेद के 'अनुभव' के आधार पर एक फैक्टरी लगाई, जिस का नाम रखा ''आर्य समाज'' इस समाज के दस नियम हैं, यही वैदिक संस्कृति का रक्षक है।

जगमगाते लहलहाते ऋषि दयानन्द जीवन की ज्वाला को सदा के लिए अमर करने के लिए, अन्तिम समय में ऋषि जी का ''वेद मन्त्रों का गान, भगवान का ध्यान और चेहरे की मुस्कान ने किसी ''उदासी को साहसी'' बना दिया, किसी ''नास्तिक को आस्तिक'' किसी को ''धर्म का दीवाना और किसी को देश का परवाना'' बना दिया।''उसने हमें जगाया और हमने उसे सुलाया'' परन्तु उन्होंने प्राणी मात्र के कल्याणार्थ 14 बार विष पान किया और लोगों को अमृत पिलाया, अतः वह अमर हो गए। उनके प्राण त्यागने पर सूर्य और चान्द ने शोक मनाया, परन्तु दीपावली की जगमगाहट ने उनके बलिदान का स्वागत किया। किसी कवि ने इसी लिए कहा था–

चलो परलोक यात्रा पर,
दयानन्द हिन्द के माली।
लिये लाखों 'दिये' हाथों,
खड़ी स्वागत को दीवाली।।

शारदीय नवसस्येष्टि दीपावली

श्रीमद्दयानन्द निर्वाण : कार्तिक वदि अमावस्या

शारदीय शुभ शस्य सुहाई, अद्‌भुत सुन्दरता सरसाई।
मुद्‌ग, माष, तिल, शालि चुलाई, जन-मन भरते मोद-बधाई।
लिपे पुते घर हैं छवि छाये, दीपावली की ज्योति जगमगाये।
नवान्नेष्टि सज्जन करते हैं, शुद्ध गन्ध घर-घर भरते हैं।
थल-थल में रम रही है, सदन सदन सुसमृद्धि सना है।
(श्री सिद्धगोपाल कविरत्न)

आनन्द सुधासार दया का पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।।
''शंकर'' दिया बुझाए दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल वदन में मिला गया।।
(कविवर नाथूराम 'शंकर' कृ)

आज शरद् ऋतु की समाप्ति में केवल पन्द्रह दिन शेष हैं। पन्द्रह दिन पीछे सर्वत्र हेमन्त ऋतु का राज्य होगा और शीत का शासन सबको स्वीकार करना होगा। वर्षा के बीतने और शीत लगने पर जनता को कुछ विशेष समारम्भ (तैयारियां) करने पड़ते हैं। वर्षा ऋतु में वृष्टिबाहुल्य से वायु मण्डल तथा घर बार विकृत, मलिन और दुर्गंधिन्त हो जाते हैं। बरसात के अन्त में उनकी संशुद्धि और स्वच्छता की आवश्यकता होती है। वायु मण्डल का संशोधन हवन यज्ञ से होता है और घर बार की स्वच्छता लिपाई पुताई से की जाती है। अब ही भावी शीत निवारण के लिए गर्म वस्त्रों का प्रबन्ध करना होता है। इसी समय श्रावणी की फसल का आगमन होता है। किसान के आनन्द की सीमा नहीं है। उसका घर अन्न धान, माष, मूंग, बाजरा, तिल और कपास से भरपूर होने को है। इस अवसर पर श्रौत स्मार्त सूत्रों में गोभिलगृह्य सूत्र, तृतीय प्रपाठक, सप्तम खण्ड, 7-24, सूत्र, पारस्करगृह्य सूत्र द्वितीय कांड 17वीं कण्डिका, 1-18 सूत्र, आपस्तम्बीय गृह्य सूत्र 19 खण्ड, मानव गृह्य सूत्र तृतीय खण्ड तथा मनुस्मृति के-

सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या तयर्वन्ते द्विजोऽध्वरैः।
अध्याय. 4 श्लोक 26।।

इस पद्य में नवसस्येष्टि वा नवान्नेष्टि (नव = नवीन-सस्य=फसल वा खेती-इष्टि =यज्ञ, अर्थात् नवीन फसल के अन्न का यज्ञ) करने का विधान है। इन सब कार्यों के लिए पर्व कार्तिक वदि अमावस्या तिथि को प्राचीन काल से नियत चला आता है उस को दीपावली भी कहते हैं। वैसे तो प्रत्येक अमावस्या को दर्शेष्टि यज्ञ कर्मकांड ग्रन्थों में विहित है, किन्तु कार्तिक अमावस्या को दर्शेष्टि और नवसस्येष्टि दोनों इष्टियों के विधान हैं, क्योंकि उनसे इस अवसर पर वर्षा ऋतु में विकृत वातावर्त की विशेष संशुद्धि अभीष्ट हैं। वर्षा के अवसान पर दलदलों के सड़ने मच्छरों के आधिक्य तथा आर्द्रता (नमी) के कारण ऋतु ज्वर (मौसमी मलेरिया बुखार) आदि रोग बहुत फैसले हैं। इसलिए इस ऋतु के शारदीय पूर्णिमा, विजय दशमी और दीपावली इन तीन पर्वों के होम, यज्ञों से उन रोगों का अनागत प्रतिकार भी अभिप्रेत है।

जैसे शारदीय आश्विन पूर्णिमा को चांदनी वर्ष भर की बारह पौर्णमासियों में सर्वोत्कृष्ट होती है, उसी प्रकार कार्तिकीय अमावस्य का अन्धकार वर्ष की बारह अमावस्याओं में सघनतम होता है। इस अमावस्या के अन्धकार पर मृच्छकटिककार शूद्रक कवि की निम्नलिखित उक्ति पूरी उतरती है।

लिम्पतीव तमोऽगांनि, वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।

अर्थ-अन्धियारी अंगों पर पुत सी गई है, आकाश गाजन सा बरसा रहा है, दृष्टि शक्ति इस प्रकार निष्फल (बेकार) हो गई है, जिस प्रकार असज्जन की सेवा व्यर्थ जाती है।

ऐसी घनी अन्धियारी रात्रि में, नवीन सावनी सस्य के आगमन से प्रमुदित कृषि प्रधान भारत वर्ष में भी वर्ष की प्रथम उक्त सस्य (फसल) के स्वागत के लिए दीपमाला का उत्सव मनाया जाता है। यह दीपमाला भी गृहों की वर्षाकालीन आर्द्रता से उनके संशोधन में सहायक होती है।

आज राज प्रासाद से लेकर रंककुटीर तक की शोभा अपूर्व है। प्रत्येक नगर और ग्राम का प्रत्येक आर्य घर परिमार्जन और सुथा (कली और चूना) वा पिंडोश मृतिका के लेपन से श्वेत रूप धारण किए हुए है। प्रत्येक अट्टालिका, आंगन और कक्ष्या (कोठरी) में दीप पंक्ति जगमगा रही है। धनियों के बहुमूल्य कांचमय प्रकाशोपकरणों (झाड़ फानूस आदि शीशे आलाय) से लेकर दीनों के दीवलों (मृण्मय तेल के छोटे-छोटे दीपकों) तक की कृत्रिम ज्योति प्रकृति के प्रगाढ़ान्धकार से स्पर्धा (होड़ी होड़ी) कर रही है। पुरुषोत्तम प्रिया के कृपापात्रों के भवन नाना व्यञ्जनों और विविध मिष्ठानों की सरस सुगन्ध से परिपूर्ण हैं तो लक्ष्मी के कृपाकटाक्ष से वंचित दीनालय धान्य की खीलों से ही सन्तुष्ट हैं। संक्षेपतः आज प्रत्येक आर्य परिवार ने अपने गृह को स्ववित्तानुसार मनोहर बनाने का भरपूर प्रयत्न किया है। इसका कारण यह है कि चिरकाल से प्रायः प्रत्येक आर्य सन्तान के हृदय में यह विश्वास बद्धमूल है कि आज की महारात्रि में महालक्ष्मी (धन की देवी) भ्रमण करने निकलती

है और जिस सदन को सबसे सुन्दर पाती है, उसी को वर्ष भर के लिए अपना आवास बना लेती है-उसमें वर्ष भर तक समृद्धि (धन्यधान्य) का वास रहता है। इस विश्वास का मूल स्रोत यही होगा कि मानव शास्त्र के तत्ववेता भारतवासी शोभा और स्मृति तथा दारिद्रय और दीनता के अन्योन्याश्रम वा समवाय-सम्बन्ध से पूर्ण परिचित थे। वे भली प्रकार जानते थे कि शोभनीय स्थानों में ही समृद्धि रहती है, अथवा समृद्धि के स्थान में शोभा स्वयंमेव आन विराजती है। इसके विपरीत दारिद्रय वा मालिन्य में दीनता का वास रहता है वा दीनता की विद्यमानता में दारिद्रय आप ही आ जाता है। वस्तुतः लक्ष्मी देवी शोभा और समृद्धि के कविकल्पित रूपक की ही एक मूर्ति है। आज वर्ष के प्रथम शस्य श्रावणी शस्य के शुभागमन के अवसर पर गृहों को शोभा और समृद्धि के आवास योग्य बनाना स्वाभाविक और समुचित ही था। यही लक्ष्मी की पूजा थी, क्योंकि पूजा का वास्तविक भाव योग्य को योग्य स्थान प्रदान ही है। आज नवशस्य के शुभागमनावसर पर शोभा और समृद्धि को उसको योग्य स्थान प्रदान शोभा को समुचित स्थान और अवसर पर स्थापना ही उसकी वास्तविक पूजा है। किन्तु तत्व के परित्याग और रूढ़ि की आरूढ़ता के युग पौराणिक काल में लक्ष्मी पूजा का यह तत्वांस अर्न्तदृष्टि से तिरोहित हो गया और उसके साथ में उल्लूकवाहनी की षोडशोपचार पूजा प्रचलित हो गई उसके वाहन (मूढ़ता के साक्षात् स्वरूप उल्लू महाराज अपनी उपास्य देवी के पदार्पण की प्रतीक्षा में दीवाली को सारी रात जागरण (रतजगा) करते हैं। प्रायः बुद्धिविशारद भक्त शिरोमणि तो निद्रा के अवसरण के लिए रात्रि भर द्यूत क्रीड़ा में रत रहते हैं मनः कल्पित लक्ष्मी की प्रतीक्षा करते हुए भी साक्षात् लक्ष्मी (धन सम्पत्ति) को वे द्यूत द्वारा दुतकारते हैं-तिरस्कार पूर्वक उस को घर से धक्का देते हैं-''अक्षैर्मा दीव्य, इस अथर्ववेद की कल्याणी वाणी का प्रत्यक्ष प्रतिवाद वा अनादर करते हैं।

आजकल के कलि काल में वैदिक कालीन पर्व शारदीय नवसस्येष्टि तथा दर्शेष्टि का तो सर्वथा लोप हो गया है और केवल उसके बाह्य गृहपरिशोधन, परिमार्जन, दीपक पंक्ति (दीपावली-दीपमाला) प्रकाशन, मिष्टान्न तथा ताजा वितरण और घोर अविद्यान्धकार काल में प्रचारित द्यूत, दुराचार आदि उसके अनुषंगित उपचार शेष रह गये हैं। नवान्नेष्टि के चिन्ह होम तक की परिपाटी प्रायः उठ गई है। शायद ही किन्हीं विरले सौभाग्यशाली गृहों में आज की रात्रि में होम होता होगा। हां, कहीं-2 गुग्गल की धूप जलाने की रीति अवश्य प्रचलित है जो प्रशंसनीय है।

दीपावली के विषय में भी विजयदशमी के समान यह एक कल्पित कथा चल पड़ी है, कि इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र वनवास से लौट कर अपनी राजधानी अयोध्या में वापिस आए थे और उनकी प्रजा ने उस हर्षोत्सव के उपलक्ष्य में आज दीपावली की थी। उसका अनुकरण वर्तमान दीपावली चली आती है। विजयदशमी के विवरण में इस प्रसंग के उल्लिखित ऊहापोह से भले प्रकार प्रकट होता है कि यह विचार भी सर्वथा कपोलकल्पित है, क्योंकि श्री रावणवध और लंका विजयान्तर के तत्काल ही अयोध्या लौट आये थे। और जब उक्त विवेचनानुसार रावणवध फाल्गुन वा वैशाख में हुआ था तो श्री रामचन्द्र जी का अयोध्याप्रत्यागमन कार्तिक मास में किस प्रकार सम्भव है। प्रतीत होता है कि दीपावली की दीपमाला में प्रकाश से श्री रामचन्द्र के अयोध्या-प्रत्यागमन के हर्षोत्सव की कल्पना कुब्ज मस्तिष्क में हुई हो और उसी से यह दन्तकथा सर्वसाधारण में प्रचलित हो गई हो। वैदिक धर्मावलम्बी आर्य सामाजिक महाशयों का परम कर्त्तव्य है कि जहां वे इस प्रकार के ऐतिहासिक तत्व को शिरोधार्य कर कपोलकल्पनाओं का निरसन करें। वहां शारदीय नवसस्येष्टि के वैदिक पर्व का प्रत्यावर्तन करके, उसके गृह संशोधन और दीपावली प्रकाशन आदि अनुषंगों के सहित आगे पद्धति प्रदर्शित प्रकारानुसार उसके स्वरूप का आर्य जनता में प्रचार करें।

जैसा कि पर्वप्रादुर्भाव परिचय के प्रकरण में विवेचना की गई है, आर्यों का एक-एक पर्व किसी विशेष कृत्य के लिए उद्दिष्ट है और इस प्रकार उसका सम्बन्ध किसी न किसी एक विशेष वर्ग के साथ स्थापित है। जिस प्रकार वैदिक धर्म की चातुर्वर्ण्य और चतुराश्रम व्यवस्था चराचर जगत् में व्याप्त है, उसकी व्याप्ति केवल मनुष्यमात्र में ही नहीं है, प्रत्युत तिर्यग्योनियों और उद्भिजों में भी गुणकर्मानुसार वर्ण और आश्रम विद्यमान हैं-पशुओं में गौ और वनस्पतियों में अश्वत्थ (पीपल) ब्राह्मण वर्ण के अन्तर्गत है। इस विषय का यहां अधिकार विस्तार, प्रकरणान्तर प्रवेश का दोषावह होगा-इसलिए संकेतमात्र इतना ही पर्याप्त है-इसी प्रकार आर्यों के पर्वों में भी चातुर्वर्ण्य व्यवस्था पाई जाती है। श्रावणी उपाकर्म, स्वाध्याय से सम्बद्ध होने के कारण, ब्राह्मण पर्व है लोक में भी श्रावणी (सलूनी) ब्राह्मण का पर्व कहलाती है। विजयदशमी क्षत्रियों का दिग्विजय यात्रा और क्षात्रधर्म के विकास से सम्बन्ध रखने के कारण क्षत्रिय पर्व कहते हैं, शारदीय नवसस्येष्टि वा दीवाली के पर्व का विशेष सम्बन्ध वैश्य कर्म (कृषि, वाणिज्य और उनकी अधिष्ठात्री समृद्धि की देवी लक्ष्मी से है, इसलिए दीवाली वैश्य पर्व है और लोग भी इसको वैश्यों का पर्व मानते हैं। दीपावली के अवसर पर, जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है, नवीन श्रावणी-सस्य के अन्न से होम होता है। इसी अवसर पर व्यवसायी जन अपने बही खातों का नवीन वर्ष आरम्भ करते हैं। आढ़त की दुकानों पर नए बही खाते दीपमाला से ही बदल जाते हैं। यह सब बातें इस पर्व का वैश्यत्व पूर्णरूपेण स्थापित करती हैं। परन्तु जिस प्रकार चारों वर्ण और उनके गुण कर्म मुख्यतः पृथक्-पृथक् होते हुए भी, गौण रूप से एक दूसरे के गुण कर्मों का समावेश चारों वर्णों में रहता है-ब्राह्मण वर्ण की सम्पत्ति स्वाध्याय, क्षत्रिय वर्ण की शूरता, वैश्य की समृद्धि और शूद्र का सेवा धर्म न्यूनाधिक चारों वर्णों के पुरुषों में पाया जाता है-उसी

प्रकार हमारे पर्व भी विशेष वर्ग से सम्बन्ध रखते हुए भी सर्व साधारण के सम्मिलित (सांझे के) पर्व भी हैं।

ऋषि निर्वाण दिवस

किन्तु इस दीपमाला की महारात्रि का महत्व एक महा घटना ने और भी बढ़ा दिया। इसी के सायंकाल विक्रमी सं. 1942 तदनुसार 30 अक्तूबर सन् 1883 ई. मंगलवार को वीर विक्रम की 20वीं शताब्दी को अद्वितीय वेदोद्धारक और वर्तमान आर्य समाज के संस्थापक तथा आचार्य महर्षि दयानन्द की उच्च आत्मा ने इस नश्वर शरीर का परित्याग करके जगजननी की गोद में आश्रयण का आनन्द प्राप्त किया था। महापुरुषों का देहावसान साधारण मनुष्यों की मृत्यु के समान शोक जनक और रुलाने वाला नहीं होता। उनका प्रादुर्भाव और अन्तर्धान दोनों ही लोक-कल्याण और आनन्द प्रदान के लिए होते हैं। महापुरुषों का इस लोक में आगमन तो लोकाभ्योदय के लिए प्रत्यक्ष ही है। किन्तु उनका इहलोक लीला संवरण भी आनन्द का हेतु होता है। वे परोपकार में अपने प्राणों का अर्पण करते हैं। संसार के मुख के लिए अपने शरीर की बलि देते हैं, इसलिये जनता उनके बलिदान पर उनकी कीर्ति का कीर्तन और गुणगान करके एक प्रकार का आनन्दानुभव करती है। उनका बलिदान स्वयं जनता के लिए परोपकारार्थ देहोत्सर्ग का उत्तम आदर्श स्थापित करके, जनता में अनुकरण, उदाहरण तथा सत्सम्प्रदाय का प्रवर्तन और सुख का संयोजन करता है। इस पंच भौतिक शरीर को त्यागते हुए उनकी आत्मा स्वयं भी सन्तोष और आनन्द लाभ करती है। सन्तोष इस लिए कि वे अपने इस लोक में आने का उद्देश्य पूर्ण करते हुए अपने इस लोक के जीवन को परोपकार में विसर्जन कर रहे हैं और आनन्द इसलिये कि उनका जीवात्मा प्राकृतिक बन्धनों से मोक्ष पाकर परम पिता का संसर्ग व संयोग प्राप्त कर रहे हैं और साथ ही अपने प्रभु की इच्छा को पूर्ण कर रहा है। ''प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो।'' महर्षि दयानन्द के अन्तिम शब्द यही थे। किसी उर्दू कवि ने कहा है-

''राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।''

इसी लिए वैदिक धर्मावलम्बी आर्यों में मोहम्मदियों के समान महापुरुषों के अन्तर्धान की स्मारक तिथियों पर शोकातुर होने व रोने पीटने की रीति नहीं है, प्रत्युत इन अवसरों पर उनकी गुणावली गाकर आत्मा में आनन्द का संचार किया जाता है। सिखों, कबीर-पन्थियों, दादूपन्थियों आदि सनातनधर्मी आर्य सन्तान (हिन्दुओं) के अन्य सम्प्रदायों में भी अपने धर्म संस्थापक गुरुओं के चोला छोड़ने के दिन भण्डारा रचाने की रीति है जिसमें उनके शब्द कीर्तन करने और कड़ाह प्रसाद बांटने का आनन्द मनाया जाता है और शोक लेशमात्र भी नहीं होता। फलतः आर्य जाति में शोक-प्रदर्शनार्थ कोई भी पर्व नहीं है, न ही शोक प्रदर्शन में किसी पर्वता (उत्सवता) का सम्भव है और अतएव मृत्युत्सव, शोकोत्सव व शोकपर्व पद ही असंगत और असम्बद्ध हैं। आर्यों के यहां किसी महात्मा के भौतिक देह त्याग के दिन की पुण्य तिथि को तिथि (पवित्र तिथि) निर्वाण दिन व अन्तर्धान दिवस कहा जाता है।

अतः आज महर्षि दयानन्द के गुणानुवाद का अवसर उपस्थित है। महर्षि दयानन्द के आर्य जनता पर इतने असंख्य और अनन्त उपकार हैं कि मुझ जैसे क्षुद्र लेखकों की निर्बल लेखनी उनके लिखने में असमर्थ है। जिस प्रकार समुद्र की विस्तृत बालुका में असंख्य और अनन्त कण होते हैं और जिस प्रकार दिनकर की किरणावली की गणना नहीं हो सकती उसी प्रकार महापुरुष की भी गुणावली अगणनातीत और महिमा अप्रेमय होता है। विचारक उस पर विचार और मनन करते रहते हैं। कवि उसका कीर्तन करते रहते हैं। गायक उसके गान से स्वरसना को रसवती और पवित्र करते रहते हैं और संसारी जन उनसे शिक्षा ग्रहण करके अपना जन्म सुधारते रहते हैं। सच पूछिये तो संसृति सागर में महात्माओं की चरितावली ही तरणी है और उनके आदर्श कर्म ही ज्योति स्तम्भ हैं, जो भूले भटके बटोहियों को मार्ग दिखलाते और पार लगाते हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की जीवनी न जाने कितने कवीश्वरों के वाग्विलास का विषय बनी है। संस्कृत और हिन्दी काव्यों का प्रचुर भाग श्री रामचन्द्र के गुणानुवाद से ही व्याप्त है। रामकथा ने न जाने कितने पथिकों को सत्पथ दिखलाया है और न जाने उसके कितने भक्तों को भक्ति रस में आप्लावित किया है। योगिराज श्री कृष्ण का पवित्र चरित्र पचासों काव्यों, गानों और घर-2 की चर्चा का विषय बना हुआ है। उनकी भगवद् गीता का कर्मयोग सहस्रों आलसियों और उदासियों को कर्म मार्ग में प्रवृत्त करके कर्मण्य और कर्म वीर बना रहा है। भगवान तथागत के जीवन ने पचासों बौद्ध जातकों को घेरा हुआ है और वह विविध जातियों के करोड़ों नर-नारियों और राव-रंकों को शान्तिप्रद बना है। कहां तक गिनाएं, संसार की सिरमौर भारत वसुन्धरा तो ऐसे अनेक महात्माओं के गुणगान से गुञ्जायमान है।

ऊपर कहा जा चुका है कि आज हमारे लिये भी एक महात्मा के गुणगान से अपने कर्ण कुहरों को पवित्र करने और उससे शिक्षा ग्रहण करने का सुयोग पुनरपि प्राप्त है। आओ, आज आचार्य दयानन्द के पवित्र चरित्र की कुछ विशेषताओं पर विचार करके अपने समय का सदुपयोग करें।

आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द के जीवन पर विचार करते हुए एक विचारक की दृष्टि से कर्मयोगों के नानारूप जिनमें उस कर्मवीर ने अपनी सारी आयु व्यतीत कर दी, तिरोहित (ओझल) नहीं रह सकते। यहां हमारा अभिप्राय उनकी आद्यावस्था के उन मत परिवर्तनों से नहीं है, जो सत्य की गवेषणा में उस जिज्ञासु व तत्वान्वेषी के विचारों में समय-समय पर होते रहे, प्रत्युत उनकी निश्चित कार्य पद्धति को ग्रहण कर चुकने और आर्य समाज की संस्था को स्थापित करके क्रमबद्ध कर्म क्षेत्र में अवतीर्ण होने पर जिन विविध रूपों में उस उपकारी ने जनता का उपकार किया है। (अन्य लेखों में ऋषि के विचारों व कर्मों को पढ़ें।)

(पर्व पद्धति से साभार)

स्वामी दयानन्द की महानता

यहां महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा समय-समय पर प्रकट की गई सम्मतियों का संकलन किया गया है, जिससे उनकी महत्ता का दिग्दर्शनमात्र हो सकता है-

* दयानन्द का चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या और दुःख का विषय है।..........

महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे।

उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा है।

-महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गान्धी

* मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को, जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है।

.... मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक उस दयानन्द को आदर-पूर्वक श्रद्धांजलि देता हूं, जिसने देश की पतितावस्था में सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया। -डा. रवीन्द्रनाथ ठाकुर

* वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा, और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति-सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती है। इन दो शब्दों का, जोकि हमारी भावनाओं के अनुसार एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं, मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है। उसके व्यक्तित्व की व्याख्या की जा सकती है-एक मनुष्य, जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चर्म चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों में इतनी शक्ति है कि जीवन-तत्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके। वह स्वयं दृढ़ चट्टान थे। उनमें दृढ़ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चलाकर पदार्थों को सुदृढ़ व सुडौल बना सकें। प्राचीन सभ्यता में विज्ञान के गुप्त भेद विद्यमान हैं, जिनमें से कुछ को अर्वाचीन विद्याओं ने ढूंढ लिया है, उनका परिवर्तन किया है और उन्हें अधिक समृद्ध व स्पष्ट कर दिया है, किन्तु दूसरे अभी तक निगूढ़ ही बने हुए हैं। इसलिए दयानन्द की इस धारणा में कोई अवास्तविकता नहीं है कि वेदों में विज्ञान-सम्मत तथा धार्मिक सत्य निहित हैं।

वेदों का भाष्य करने के बारे में मेरा विश्वास है कि चाहे अन्तिम पूर्ण अभिप्राय कुछ भी हो, किन्तु इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। चिरकालीन अव्यवस्था और अज्ञान-परम्परा के अन्धकार में से सूक्ष्म और मर्म-भेदी दृष्टि से उसी ने सत्य को खोज निकाला था। जंगली लोगों की रचना कही जाने वाली पुस्तक के भीतर उसके धर्म पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुन्जी प्राप्त की है, जो युगों से बन्द थे और उसने पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया।

.... ऋषि दयानन्द के नियम-बद्ध कार्य ही उनके आत्मिक शरीर के पुत्र हैं, जो सुन्दर, सुदृढ़ और सजीव हैं तथा अपने कर्त्ता की प्रत्याकृति हैं। वह एक ऐसे पुरुष थे जिन्होंने स्पष्ट और पूर्ण-रीति से जान लिया था कि उन्हें किस कार्य के लिए भेजा गया है।

-श्री अरविन्द घोष

* ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति-शून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह पराक्रम फूंक दिए हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष-सिंह उनमें से एक था जिन्हें यूरोप प्रायः उस समय भुला देता है जबकि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है, किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मान कर उसे याद करने के लिए बाधित होना पड़ेगा, क्योंकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता की उपर्युक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था।

दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन नहीं किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जनजागृति के विचार को क्रियात्मक

रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्र-संगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से था।

-फ्रैंच लेखक रोम्यां रोलां

* स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया, और जहां तक समाज-सुधार का सम्बन्ध है, वह बड़े उदार-हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदों पर आधारित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदों पर बड़े-बड़े भाष्य किये, जिससे मालूम होता है कि वे पूर्ण अभिज्ञ थे। उनका स्वाध्याय बड़ा व्यापक था। -प्रो. एफ. मैक्समूलर

* आर्य समाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति, भारत चुना हुआ देश और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है........।''

-ब्रिटेन के (स्व.) प्रधानमन्त्री रेमजे मैकडानल्ड

* स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी उन्हें देवता-तुल्य जानते थे, और वह निस्सन्देह इसी योग्य थे। वह इतने विद्वान् और अच्छे आदमी थे कि वे प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान-पात्र थे। उनके समान व्यक्ति समूचे भारत में इस समय कोई नहीं मिल सकता। अत: प्रत्येक व्यक्ति को उनकी मृत्यु पर शोक करना स्वाभाविक है। -सर सैयद अहमदखां

* स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार-सम्बन्धी पुनर्रुत्थान तथा धार्मिक पुनरुद्धार के उत्तरदाता है। हिन्दू-समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। रामकृष्ण मिशन ने बङ्गाल में जो कुछ किया, उससे कहीं अधिक आर्य समाज ने पंजाब और संयुक्त प्रान्त में किया। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्य समाजी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हूं। संगठन कार्यों के सामर्थ्य और प्रसार की दृष्टि से आर्य समाज अनुपम संस्था है। -श्री सुभाषचन्द्र बोस

* स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है। वह मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोद में मैं पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्त्तव्य-पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवतिता का पाठ दिया।

-पंजाब केसरी ला. लाजपतराय

* महर्षि दयानन्द भारत-माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से थे, जिनका नाम संसार के इतिहास में सदैव चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत-माता के उन सपूतों में से हैं, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाए थोड़ा है। नैपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट एवं विजेता संसार में हो चुके हैं, परन्तु स्वामी उन सबसे बढ़ कर थे।

-खदीजा बेगम एम.ए.

* स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने ''हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों के लिए'' का नारा लगाया था।....... आर्य समाज के लिए मेरे हृदय में शुभ इच्छाएं हैं और उस महान् पुरुष के लिए, जिसका आप आर्य आदर करते हैं, मेरे हृदय में सच्ची पूजा की भावना है। -श्रीमती एनी बीसेण्ट

* स्वामी दयानन्द नि:सन्देह एक ऋषि थे उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फैंके गये ईंट-पत्थरों को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होंने अपने में महान् भूत और महान् भविष्य को मिला दिया। वह मर कर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त करने और जाति-बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है-आर्यावर्त, उठ जाग, समय आ गया हैं, नये युग में प्रवेश कर, आगे बढ़। -पाल रिचर्ड (प्रसिद्ध फ्रैंच लेखक)

* स्वामी दयानन्द के उच्च व्यक्तित्व और चरित्र के विषय में नि:सन्देह सर्वत्र प्रशंसा की जा सकती है। वे सर्वथा पवित्र तथा अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करने वाले महानुभाव थे। वह सत्य के अत्यधिक प्रेमी थे। -रेवरेण्ड सी.एफ. एण्डरूज़

* ऋषि दयानन्द ने हिन्दू-समाज के पुनर्रूत्थान में इतना अधिक हाथ बंटाया है कि उन्हें 19 वीं शताब्दी का प्रमुखतम हिन्दू समझा जायेगा। -श्री तारकनाथ दास एम.ए.पी. एच.डी. (म्यूनिख)

यः श्रमात् तपसो लोकान्त्सर्वान्त्समानशे।
सोमं यश्चक्रे केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।

-अथर्व. १०.७.३६

भावार्थ-परमात्मा परम पुरुषार्थी, पराक्रमी और परमैश्वर्यवान् हुआ सब जगत् का अधिष्ठाता है। कई लोग जो परमात्मा को निष्क्रिय अर्थात् कुछ कर्त्ताधर्ता नहीं है, ऐसा मानते हैं। उनको इन मन्त्रों की तरफ ध्यान देना चाहिए, जो स्पष्ट कह रहे हैं कि परमात्मा बड़ा पुरुषार्थी, पराक्रमी, बड़ा बलवान् और परमैश्वर्यवान् होकर सब जगत् को बनाता है। परमात्मा अपने बस से ही अनन्त ब्रह्माण्डों को बनाते, पालते, पोषते और प्रलय काल में प्रलय भी कर देते हैं, ऐसे समर्थ प्रभु को बारम्बार हमारा प्रणाम है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन में आने वाली समस्याएं

डॉ. अशोक आर्य पाकेट १/३१ रामप्रस्त से. ७ वैशाली

आज मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के चित्र तथा उनकी मूर्तियों की पूजा की जा रही है किन्तु उनके जीवन में क्या क्या समस्याएं आईं और उन समस्याओं का किस किस प्रकार उन्होंने निराकरण किया, उनके जीवन में कौन कौन से गुण थे जो आज हमें सुमार्ग पर चला कर कुपथ से हमें बचा सकते हैं, इस ओर किसी भी उस राम पूजक का ध्यान ही नहीं जा रहा, जो श्री राम की मूर्ति बनाकर उनकी पूजा को ही अपना धर्म समझ रहे हैं। आज के युग में उनकी मूर्ति की पूजा करें या न करें किन्तु उनके चरित्र को, उनकी योजनाओं को और उग्रवाद का मुकाबला करने के लिए उनकी नीतियों को अपनाने की महती आवश्यकता है। अत: आज हम उनके बाल्यकाल से यौवन काल तक जो जो समस्याएं उनके सामने आईं और उन समस्याओं का उन्होंने किस धैर्य, साहस और वीरता से मुकाबला करते हुए उन सब समस्याओं का निराकरण किया, इस प्रकार की घटनाओं को हम आपके सामने रखने का यत्न करते हैं, जिन से प्रेरणा लेकर आज हमें भी आवश्यकता है कि आज देश में कुछ उस प्रकार की ही अशांत, उग्र अवस्था बनी हुई है, जिसके समाधान के लिए श्री राम के समान ही हम और हमारी आज की सरकार कदम उठाये इसकी आज अत्यधिक आवश्यकता है।

आज हमें मूर्ति में बस रहे श्री राम की नहीं उस राम की आवश्यकता है, जिसने पिता के एक शब्द को ही अपना ध्येय बनाकर चौदह वर्ष तक जंगल में निवास को अपना कर्त्तव्य मान लिया, जबकि यह आदेश पिता दशरथ ने उन्हें कभी दिया ही नहीं था। यह तो माता कैकेयी ने श्री राम को मात्र बताया ही था कि मैंने तेरे पिता से यह वचन मांगे थे। मात्र इतना सुनकर ही श्री राम ने वनगमन किया। श्री राम वन जा रहे हैं तो उनकी सहधर्मिणी माता सीता जी ने भी महलों के सुख त्याग कर अपने पति के साथ रहने का निर्णय भी तत्काल ही ले लिया। अनुज लक्ष्मण, जिन्होंने पहले से ही श्री राम की सेवा का संकल्प ले रखा था, उन्होंने भी कभी यह नहीं सोचा कि भाई मरता है तो मरे मुझे क्या लेना? नहीं उन्होंने ऐसा नहीं किया और जंगलों के अभूतपूर्व कष्टों को महलों की सुख सुविधा से कहीं अधिक उत्तम मानते हुए उनके साथ जाने को ही अधिमान दिया और इसे ही अपना धर्म माना। यदि उस समय राजकुमार भरत और शत्रुघ्न भी अयोध्या में होते तो वह भी अवश्य ही उनके साथ वनों में चले गए होते। इस प्रकार माता और पिता के सच्चे अर्थों में भक्त श्री राम का प्रेरणा दायक जीवन था, जिसे आज संसार को केवल अपनाने से अथवा केवल उनकी पूजा मात्र से कुछ भी नहीं मिलेगा अपितु उनके जीवन के समान अपने आपको बनाने का प्रयास करने से ही कुछ संभव हो पावेगा तथा माता पिता को वृद्धाश्रम जाने से बचावेगा। अत: आओ हम सब मिलकर श्री राम के सामने समय समय पर आईं कुछ समस्याओं को जानने का प्रयास करते हुये, यह भी जाने कि उन्होंने किस प्रकार इन समस्याओं से पार पाया।

आज भी हमारे देश की कुछ उस काल जैसी ही अवस्था बन रही है, विदेशी आँखें दिखा रहे हैं और घर के अन्दर के लोग भी हमारे शत्रु बने बैठे हैं। इस अवस्था में हम श्री राम चन्द्र जी के जीवन से कुछ सीखते हुये इन सब परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति अपने अन्दर पैदा करें। इसके लिये पहले हमें उनके पिता राजा दशरथ के समय की राजनीतिक परिस्थितियों पर भी विचार करते हुये इस बात पर भी विचार करें कि क्या श्री राम को केवल भरत को राज्य देने के लिए ही जंगलों में भेजा गया होगा?, या फिर इस के पीछे कोई राजनीति या कोई रणनीति भी छुपी हुई थी। इस प्रकार का विचार करने पर जो तथ्य निकल कर सामने आते हैं, वह इस प्रकार हैं। लंका के राजा रावण की आँखें भारत के लगभग सब राज्यों पर और विशेष रुप से अयोध्या के राज्य पर थी, जो उस समय एक बूढ़े राजा दशरथ के आधिपत्य में था जो कि देश का सबसे बड़ा और सबसे सुदृढ़ राज्य था। रावण एक अत्यधिक कुटिल राजा तथा नवीनतम शस्त्रों का स्वामी था। वह अपनी प्रत्येक नीति में साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति को अपनाता था।

दशरथ इस समय तक निसन्तान था। इसने भी कुछ अत्यन्त दीर्घकालीन नीतियां बनाईं। इस नीतियों पर कुछ कार्य भी आरम्भ हुआ कि अयोध्या का सौभाग्य ही कहें कि इस राजा की तीन रानियों से लगभग एक साथ ही चार सन्तानें हुईं और वह भी चारों पुत्र। कहा तो यह भी जाता है कि इन चार भाइयों की एक बहिन भी थी, जिसका नाम शकुन्तला था तथा उसका विवाह एक ऋषि के साथ हुआ था। खैर चार पुत्र सन्तानों के होने से इस राज्य को कुछ शक्ति मिली और इन सन्तानों को बड़े योजना पूर्ण ढंग के साथ शस्त्र विद्या के साथ ही साथ नीति की शिक्षा भी दी गई। इस प्रकार की उत्तम शिक्षा दी गई कि यह राजकुमार छोटी आयु में ही बड़े बड़े महारथियों के साथ मुकाबला करते हुए विजय प्राप्त कर सकें। इनके गुरु लोग भी अपने समय के अद्वितीय गुरु थे।

उस समय गुरु विश्वामित्र एक बहुत बड़े ऋषि (वैज्ञानिक) थे। यह ऋषि नित्य यज्ञ (अनुसंधान) करते थे। इनके यज्ञ का अर्थ केवल आज के अग्निहोत्र तक सीमित नहीं था अपितु सब प्रकार की विद्याओं, जिसमें शस्त्र विद्याओं को भी समाहित किया जावे, शस्त्र बनाने तथा शस्त्र प्रयोग करने, दोनों में ही वह अपने काल के अद्वितीय ऋषि थे। अयोध्याधीश ने इस ऋषि से शिक्षा अपने बच्चों को दिलवानी चाही किन्तु यदि वह सीधे रूप से बच्चों को उनके पास भेजते तो सम्भव था उस समय के उग्रवादियों के नेता रावण को अच्छा न लगता ओर ऐसा न होने देता। भले ही इस समय तक इन भाईयों ने अत्यधिक शस्त्र विद्या तो प्राप्त कर ही ली थी किन्तु कुछ अत्यधिक उपयोगी विद्यायें इस प्रकार की थीं कि जिन्हें केवल गुरु विश्वामित्र ही दे सकते थे। सम्भवतया इस

उद्देश्य को लेकर कोई योजना बनाई गई हो ओर उस योजना के अन्तर्गत ऋषि विश्वामित्र जी उन दो बालकों को शिक्षित करने के लिये यह बहाना लेकर अयोध्या आये हों कि उनके यहाँ यज्ञ करने का राक्षस लोग विरोध करते हैं और यज्ञ (शोधशाला, जहां बम आदि शस्त्र बनाए जाते थे) भंग कर देते हैं। उन राक्षसों से रक्षा के लिये यह दो बालक उनके साथ भेज दिये जावें।

सम्भवतया दशरथ द्वारा राम लक्ष्मण को उनके साथ भेजने से इन्कार भी उनकी योजना का ही एक भाग रहे होंगे, जो बाद में स्वीकारते हुये दोनों भाइयों को उनके साथ भेज देते हैं। यह दोनों बालक जब अयोध्या से ऋषि आश्रम (जो जनक पुरी के निकट था) की ओर जा रहे थे तो मार्ग में ही गुरु ने शिष्यों की परीक्षा लेने के लिए कहा कि यहाँ से उनके आश्रम को जाने के लिए दो मार्ग हैं, एक मार्ग तो बहुत लंबा किन्तु संकट विहीन है तो दूसरा मार्ग छोटा तो है किन्तु संकटों से भरा हुआ है क्योंकि इस क्षेत्र में रावण की बहिन ताड़का रहती है, जो बहुत ही उग्रता के साथ आक्रमण करके यहाँ से निकलने वालों को समाप्त कर देती है। उसके साथ उसका एक बेटा और एक भतीजा भी (खर और दूषण) इस क्षेत्र में ही आतंक मचाते रहते हैं। वीर बालकों ने इसे अपनी परीक्षा का एक उत्तम अवसर मानते हुए इस छोटे मार्ग को ही अपनाना स्वीकार किया और कहा कि हम मार्ग में आने वाले इन दुष्टों को भी तो देखना चाहते हैं। परिणामस्वरूप इस मार्ग से ही वह आगे बढ़े और इस मार्ग में ही उन्होंने ताड़का और उनके भतीजों से मुकाबला करते हुए उन्हें मार्ग से खदेड़ दिया और सफलता पूर्वक बिना किसी हानि के ही आश्रम में पहुँच गए।

दूसरे दिन से जब इन ऋषियों ने पुन: अनुसंधानात्मक यज्ञ आरम्भ किया तो यह तीनों दुष्ट फिर से मार्ग का रोड़ा बन गए। इस यज्ञ के रक्षक के रूप में अपने धनुष (उस समय संभवतया विनाशक शस्त्रों को धनुष बाण कहते होंगे। जिस प्रकार आजकल राकेट अथवा भयंकर शस्त्र किसी विशेष साधन से चलाये जाते हैं, इस प्रकार ही जिस साधन से शस्त्र छोड़ा जाता था, उसे संभव है धनुष कहा जाता हो जो शस्त्र अथवा बम छोड़ा जाता थे उसे बाण कहते हों। जयपुर के जयगढ़ दुर्ग के अन्दर एक तोप पड़ी है, इस तोप को आज भी जय बाण के नाम से जाना जाता है। यह मेरे इस कथन की संतुति करता है।) बाण लेकर तैयार खड़े थे क्योंकि इन दो बालकों को बालक मात्र समझते हुए एक दिन पूर्व ही उनसे यह दुष्ट पराजित हो चुके थे, इस कारण उनसे डर भी रहे थे और उनसे लोहा भी लेते हुए उन्हें हराना भी चाहते थे। इस कारण इस शोद्धशाला रूपी यज्ञ को ध्वस्त करने के लिए वह छुप छुप कर आक्रमण कर रहे थे किन्तु राम और लक्ष्मण के शस्त्र उन्हें कुछ भी करने नहीं दे रहे थे। संभव है यह अवस्था अनेक दिन तक अनवरत रूप से चलती रही हो और अंत में एक दिन ऐसा आया कि एक एक करके इन तीनों का दोनों भाइयों ने अंत कर दिया। इस प्रकार अब यहां निवास कर रहे शोधार्थी ऋषियों को निर्विघ्न अपने शोध रूपी यज्ञ को संपन्न करने का अवसर मिल गया।

संकट काल में जब कोई वीर राज्य का राजकुमार किसी अन्य शक्तिशाली राज्य से सम्बन्ध बना लेता है तो उसकी शक्ति दोगुणा हो जाती है, उसके सामने कोई भी दुष्ट टिक पाने का साहस नहीं कर पाता। गुरु विश्वामित्र जी का यज्ञ तो निर्विघ्न चलने लगा था किन्तु देश के दूसरे भागों में अभी भी यह संकट बना हुआ था। इस कारण अयोध्या को और भी अधिक बलशाली बनाने की आवश्यकता का इस मुनि ने अनुभव किया और इन दोनों बालकों को लेकर जनकपुरी में हो रहे स्वयंवर में ले गया। जब स्वयंवर में किसी भी देश का राजा शर्त पूरी करने में सफल नहीं हुआ तो गुरु आज्ञा से श्री राम चन्द्र जी ने अपनी परीक्षा दी और इस परीक्षा के लिए रखे गए पुराने धनुष को तोड़ कर सीता से विवाह कर लिया। इसके साथ ही राजा दशरथ की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए सीता की दूसरी बहिन और चाचा की दोनों बेटियों का विवाह भी दशरथ के अन्य तीनों पुत्रों के साथ करके एक न टूटने वाला बंधन अयोध्या और जनकपुरी में बन गया। इन दोनों के मिलने से अयोध्या की शक्ति अत्यधिक बढ़ गई इसके साथ ही जनकपुरी का भी दूर दूर तक कोई शत्रु नहीं रहा।

हम अनुमान लगाते हैं कि अयोध्या को सुरक्षित करते हुए दानवों से अयोध्या अथवा भारत को बचाने के लिए इन दोनों महाशक्तियों के मध्य होने वाले युद्ध को भारत से बाहर ले जाने का प्रयास अयोध्या का रहा होगा जबकि रावण की भी यहीं इच्छा थी कि युद्ध हो तो लंका में हो ताकि अयोध्या की सेना को न तो ठीक से खाने को ही कुछ मिल सके और न ही शस्त्रास्त्रों की ही यथा समय आपूर्ति हो पावे और अयोध्या की सेना यहाँ पर ही भूख से और शस्त्रों के अभाव से दफन हो जावे। इस योजना को बहुत समय पूर्व ही बना लिया गया होगा। इस योजना के अनुसार ही राजा दशरथ का विवाह जब रानी कैकेयी से हुआ तो उसके साथ एक दासी भी भेज दी गई ताकि समय समय पर बनाई जा रही योजनाओं को पूरा करने के लिए वह अपनी रानी को विवश करती रहे। इस योजना के अंग रूप में ही सम्भवतया जब राम को राज्य देने की घोषणा की गई तो इस दासी ने कैकेयी को अपनी पति से लिए गए दो वचनों को आज माँगने का उत्तम समय बताते हुए कहा कि वह एक वचन में अपने बेटे भरत को राज्य दिलावे तथा दूसरे वचन में राम को एक दो नहीं अपितु पूरे चौदह वर्ष तक के लिए वनों में रहने के लिए कहें। इससे यह लक्षित होगा कि राक्षस लोग समझेंगे कि अयोध्या के राजकुल में टूट हो गई है और अब अयोध्या को वह सरलता से झपट सकते हैं।

परिणाम स्वरूप श्रीराम अपनी पत्नी सीता तथा भाई लक्ष्मण के साथ वनों को गए। इस समाचार को सुनकर विदेशी दुष्टों के आनंद की कोई सीमा न रही किन्तु वह इस बात को नहीं जानते थे कि वनों में भी प्रत्येक कदम पर अयोध्या की सेना वेश बदल कर श्री राम चन्द्र जी का सहयोग कर रही थी। ठीक उस प्रकार जिस प्रकार पूर्वी पाकिस्तान के अन्दर १९७१ में भारतीय सेनाओं ने बंगला देश की सेनाओं का वेश बनाकर वहां पर पाकिस्तान की सेना के साथ युद्ध करते हुए मुजीबुर्रहमान तथा उसके साथियों की रक्षा की और पाकिस्तान की सेना के एक लाख सैनिकों को बंदी बनाकर भारत ले आये तथा बंगलादेश को पाकिस्तान के चंगुल से निकाल कर एक आजाद देश बना दिया। चाहे बाली को हटाना हो, चाहे सुग्रीव की सहायता की घटना हो, हनुमान से मिलना हो, यह सब अयोध्या की योजना से ही हो रहा था और अयोध्या में फूट का दिखावा करते हुए वनों में श्री राम को निरंतर अयोध्या की ओर से सहयोग मिल रहा था, जिन कारणों से अपने प्रत्येक प्रयास में सफल होते हुए श्री राम निरंतर रावण के निवास लंका की ओर बढ़ रहे थे।

लंका का राजा रावण इस बात को अंत तक नहीं जान पाया होगा कि यह अयोध्या का एक षड्यंत्र है, जो उसके विनाश के लिए रचा गया होगा। इस कारण रावण इन दोनों भाइयों पर वनमार्ग में लगातार कुटिलता करता रहा और यह दोनों भाई रावण की इन कुटिल चालों को ध्वस्त करते हुए निरंतर आगे ही बढ़ते चले गए। इस समय तक वह अपने योजना के अनुसार जो जो भी गुप्त निर्णय लेकर आये थे, उन सब को बड़ी सूझ बूझ से सफल करते हुए आगे बढ़ रहे थे। इन चरणों में ही रावण के एक बेटे तथा बहनोई सुबाहु आदि का भी श्री राम ने मुकाबला किया और उनकी विशाल तथा विनाशक सेना में से एक सैनिक को भी जीवित नहीं छोड़ा और इन दोनों को भी नरक में भेज दिया। इसके पश्चात्, इन दोनों भाइयों के सामने रावण की बहिन शूर्पनखा आती है। उसके पति की तो मृत्यु हो चुकी थी और राक्षसों में यह परम्परा उन दिनों चलती थी की एक विधवा स्त्री पुन: विवाह कर सकती है। इस कारण उसने पहले श्री राम और फिर श्री लक्ष्मण को लुभाने का भरसक प्रयास किया। राम और लक्ष्मण नहीं चाहते थे कि एक महिला पर शस्त्र उठाये जावें, इस कारण वह उसे समझाते रहे किन्तु जब वह किसी भी प्रकार मान नहीं रही थी तो लक्ष्मण ने उसे इतना बुरा भला कहा कि वह इस अपमान के घूंट को पीकर अपने भाई रावण के पास गई और उसे कहा कि उन दोनों भाइयों ने उन्हें इतना अपमानित किया कि वह उस अपमान को कभी भूल नहीं सकती और बदले की आग में तड़प रही है। इस अपमान के लिए आज भी बहुत सी महिलायें अपनी पुत्रवधू अथवा बच्चों की किसी भयंकर गलती पर कहती है कि क्या नाक कटवा ली है तूने। इस प्रकार इस अपमान का अर्थ ही नाक कटवाना था। भाव यह है कि शूर्पनखा को इतना अपमानित किया गया कि वह इसे अपने नाक कटाने के समान समझने लगी।

जैसा कि अयोध्या तथा श्री राम का अनुमान था ठीक वैसे ही हुआ। रावण ने मारीच नामक एक व्यक्ति को कुटिल वेश में सोने के हिरण के रूप में श्री राम की कुटिया के आसपास कुलाचें भरने के लिए भेजा ताकि वह श्रीराम और लक्ष्मण को वहां से दूर ले जावे और फिर वह सरलता से सीता का हरण कर ले। हुआ भी ठीक इस प्रकार ही। स्वर्ण मृग कुटिया के पास कुलाचें भरने लगा, इसे देखकर सीता जी ने इस हिरण को पकड़ने के लिए अपने पति को कहा। राम जानते थे कि सोने का मृग नहीं होता तो भी वह समझ गए की आज उनकी बनाई हुई योजना पूर्ण होने जा रही है, बस फिर क्या था उन्होंने अपना धनुष और तुणीर उठाया और हिरण के पीछे हो लिए। कुछ दूर जाने पर एक तीर हिरण के लगा और वह घायल हो गया। इस अवस्था में भी रावण के कोप से बचने के लिए चिल्लाया। हाय लक्ष्मण भ्राता! मुझे बचाओ।'' इस बात को आप भी सब लोक सरलता से समझ सकते हैं और उस समय के लक्ष्मण, सीता और यहाँ तक कि श्री रामचंद्र भी समझते थे। जब वह इस प्रकार चिल्लाया तो यह आवाज उनकी कुटिया तक पहुंचती है, जिसमें उस समय लक्ष्मण और सीता रुके हुए थे। यह समझ सकते थे कि जब इस प्रकार की आवाज उन तक पहुँच सकती है तो वह प्रत्युत्तर में यह भी चिल्लाते हुए पूछ सकते थे कि भ्राता राम क्या हुआ है। मैं सहायता के लिए माता सीता जी को अकेले छोड़ कर आऊं क्या? उधर श्री राम भी समझ सकते थे कि इस आवाज को सुनकर सीता जी निश्चय ही सहायता के लिए लक्ष्मण को भेज देगी। यह कुटिलता है, इससे बचने के लिए वह भी चिल्ला कर कह सकते थे कि मुझे कुछ नहीं हुआ लक्ष्मण इधर सीता को अकेले छोड़ कर मत आना। परिणाम स्वरूप लक्ष्मण अयोध्या की बनाई गई योजना के अनुसार वहां से राम की सहायता के लिए चला जाता है और फिर रावण के लिए सीता हरण का मार्ग साफ हो जाता है।

उन दिनों जंगलों में निवास करने वाली एक जाति होती थी, जिसे गिद्ध कहा जाता था। इस जाति के राजा का नाम जटायु था। जिस प्रकार रावण के पास वायु मार्ग से जाने के लिए विमान था उस प्रकार ही इस राजा के पास भी एक विमान था। इस विमान से वह जा रहा था कि उसने सीता के चिल्लाने की आवाज सुनी और उसने देखा कि रावण एक महिला को लिए वायुमार्ग से भागा जा रहा है। उसने इस दुष्ट को ललकारा, उसके साथ इस महिला को छुड़ाने के लिए उससे युद्ध भी किया किन्तु इस युद्ध में वह बुरी प्रकार से घायल हो गया। इसे सौभाग्य ही कहें कि जब राम और लक्ष्मण सीता जी की खोज करते हुए उधर से निकले तो घायल पड़े जटायु ने उन्हें बताया कि सीता का अपहरण कर लंका का राजा रावण लंका ले गया है। इस समय एक विशाल सेना का इन दोनों भाइयों को साथ मिलता है। यह सेना जंगल के लोगों की थी। इस जाति के लोगों को वानर कहा जाता था। मैं तो यह भी मानता हूँ कि इस सेना का एक बड़ा भाग अयोध्या से गुप्त रूप में आई सेना का ही रहा होगा। इस सेना की सहायता से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए आठ योजन की दूरी का पुल केवल आठ दिन में तैयार कर दिया गया और इतना मजबूत कि लगभग ग्यारह लाख वर्ष बीतने के पश्चात् भी यह पुल रामेश्वरम् से श्रीलंका तक आज भी ज्यों का त्यों खड़ा हुआ है। इस से शत्रु दल में भय पैदा हो गया।

कहा जाता है कि शत्रु को भयभीत कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना लाभदायक होता है। इस नीति के लिए ही हनुमान जी लंका गए। जहाँ उन्होंने सीता जी को सांत्वना दी, वहां दो कार्य और भी कर दिये। एक तो यह कि रावण के भाई विभीषण जी के मन में श्रीराम के प्रति आस्था का बीज बो दिया तो दूसरे यह कि लंका के लोगों में आपसी कटुता भर दी जिसे आग लगाना कहा जाता है। इस प्रकार लंका दो गुटों में बँट गई तथा कुछ समय बाद रावण का यह भाई भी रावण की दुष्टता के कारण उसका साथ छोड़ कर श्रीराम के साथ आ मिला। इस प्रकार लंका पूरी तरह से बाँट दी गई और उसकी शक्ति बहुत कम हो गई।

युद्ध हुआ, शत्रु दल ने खूब कुचालें चलीं किन्तु राम और उनकी सेना के सामने उनकी एक न चली। विभीषण को श्री राम ने अपने भाई के साथ युद्ध लड़ने की अनुमति तो नहीं दी किन्तु समय समय पर आवश्यकता अनुसार विभीषण से सलाह अवश्य लेते रहे। इस सब का यह परिणाम हुआ कि रावण युग का अंत हो गया और अब लंका पर श्री राम ने विभीषण को राज्य पर आसीन किया और स्वयं वहां से एक विमान लेकर अयोध्या के लिए रवाना हो गए क्योंकि अब चौदह वर्ष पूर्ण होने के लिए केवल एक दिन ही शेष रह गया था।

स्वामी जी के जीवन का अन्तिम दृश्य

ले०—इन्द्र विद्यावाचस्पति

उदयपुर में स्वामी दयानन्द जी 1883 ईस्वी के फरवरी मास के अन्त तक रहे। मार्च के प्रारम्भ में आप शाहपुरा रियासत की राजधानी में पहुंच गये। शाहपुराधीश राजा नाहरसिंह जी स्वामी जी के भक्तों में से थे। उन्होंने बड़े भक्ति-भाव से स्वागत किया। अपने विशेष बाग नाहर-निवास में स्वामी जी का आसन जमाया। प्रतिदिन वैदिक धर्म का प्रचार होने लगा। महाराज स्वयं प्रतिदिन सायंकाल 3 घण्टे के लिए शिष्य-भाव से आते थे, और अध्ययन करते थे। मनुस्मृति, योग दर्शन, वैशेषिक दर्शन आदि के आवश्यक भागों का महाराज ने पाठ समाप्त कर लिया।

स्वामी जी के उपदेशों से प्रेरित होकर महाराज ने महलों में एक यज्ञशाला बनवाई, जिसमें प्रतिदिन हवन कराने का संकल्प किया। मई मास के मध्य तक शाहपुरा में धर्मवृष्टि करके ऋषि 17 मई 1883 को जोधपुर की ओर रवाना हुए। शाहपुरा से जोधपुर की ओर रवाना होने के समय महाराज नाहरसिंह ने स्वामी जी से कहा कि ''महाराज! आप जोधपुर तो जाते हैं, परन्तु वहाँ वेश्या आदि का खण्डन न करना।'' ऋषि ने उत्तर दिया कि ''राजन्! मैं बड़े वृक्ष को नहेरने से नहीं काटता, उसके लिए बड़े शस्त्र की आवश्यकता होगी।''

जोधपुर में कर्नल सर प्रतापसिंह और रा.रा. तेजसिंह आदि रईस ऋषि के शिष्य हो चुके थे। वे लोग देर से निमन्त्रण भेज रहे थे। अब समय पाकर ऋषि ने जोधपुर राज्य में भी सुधार का बीड़ा उठाने का संकल्प किया। शाहपुरा से आप अजमेर आये और वहाँ से जोधपुर के लिए रवाना हुए। अजमेर के आर्य पुरुषों ने ऋषि की सेवा में उपस्थित होकर फिर निवेदन किया कि '' अब आप मारवाड़ प्रान्त में पधारते हैं। वहाँ के मनुष्य प्राय: गँवार और उजड्ड हैं, और उनका स्वभाव और बर्ताव भी अच्छा नहीं। इसलिए अभी आप वहाँ न जाइए।'' ऋषि ने उत्तर दिया कि ''यदि लोग मेरी अँगुलियों की बत्तियाँ बनाकर जलावें, तब भी मुझे कुछ शंका नहीं हो सकती। मैं वहाँ जाऊँगा और अवश्य वैदिक धर्म का प्रचार करूँगा।''

इस उत्तर को सुनकर सब चुप हो गए, परन्तु एक सज्जन ने निवेदन किया कि ''तथापि आप वहाँ सोच-समझकर और मधुरता से काम लेना, कारण यह है कि वहाँ के रहने वाले कठोर हृदय और कपटी होते हैं।'' इसका उत्तर ऋषि ने दिया कि ''मैं पाप के बड़े-बड़े वृक्षों की जड़ काटने के लिए तीक्ष्ण कुठारों से काम लूँगा, न कि उन्हें बढ़ाने के लिए कैंचियों से उनकी कलम करूँगा।''

जोधपुर में स्वामी जी का भली प्रकार स्वागत हुआ। राजा जवानसिंह जी ने आवभगत की। बाद में महाराजा प्रतापसिंह और रा. रा. तेजसिंह आदि रईसों ने दर्शन किये और आतिथ्य का उचित प्रबन्ध किया। कुछ दिनों पीछे स्वयं जोधपुराधीश महाराज यशवन्तसिंह भी दर्शनों को आये। ऋषि ने उन्हें बहुत उपदेश दिया। प्रतिदिन सायंकाल को स्वामी जी सर्व-साधारण को धर्मोपदेश करते और फिर दो घण्टे तक राजभवन में जाकर महाराज तथा उनके अन्य समीपवर्तियों की शंकाओं का निवारण करते। महाराज प्रतिदिन ऋषि से कुछ-न-कुछ सीखते थे। ऋषि ने अपने व्याख्यानों में मूर्तिपूजा, वेश्यागमन, चक्रांकित सम्प्रदाय और इस्लाम का बड़े जोर से खण्डन किया, जोधपुर में यही शक्तियाँ थीं। जोधपुर के पुजारी बड़े प्रचण्ड थे। महाराज और रईसों पर वेश्याओं का पूरा अधिकार था। रियासत में चक्रांकितों का बड़ा जोर था और राज्य के मुसाहिब आला भय्या फैजुल्ला खाँ इस्लाम के खण्डन से बहुत क्षुब्ध हो गए थे। एक रोज उन्होंने स्वामी जी को यहाँ तक कह दिया कि ''यदि इस समय मुसलमानों का राज्य होता तो आप ऐसे व्याख्यान न दे सकते, और देते तो जीवित नहीं रह सकते थे।'' स्वामी जी ने उसका उत्तर दिया- ''अस्तु, कोई बात नहीं है। मैं भी उस समय दो क्षत्रिय राजपूतों को पीठ ठोंक देता तो वे उन लोगों को अच्छी तरह समझ लेते।''

इस प्रकार जोधपुर में स्वामी जी के शत्रुओं की संख्या बढ़ रही थी। इसी प्रकार एक और घटना हो गई, जिसने विरोधियों के बल को बहुत बढ़ा दिया। महाराज यशवन्तसिंह का नन्हींजान नाम की एक वेश्या से गहरा सम्बन्ध था। एक रोज अपने निश्चित नियम के अनुसार स्वामी जी दरबार में पहुँचे। उस समय महाराज के पास नन्हींजान आई हुई थी। स्वामी जी के आने का समय जानकर महाराज उसे डोली में रवाना कर रहे थे। डोली उठने से पूर्व ही स्वामी जी को समीप आता देखकर महाराजा घबरा गये और डोली को स्वयं कन्धा लगाकर उठवा दिया। ऋषि ने यह देख लिया। इससे उनका चित बहुत ही अधिक क्षुब्ध हुआ। उस दिन अपने उपदेश में ऋषि ने राजधर्म का वर्णन करते हुए बताया कि राजा सिंह के समान हैं और वेश्याएं कुतियों के समान। राजाओं का सम्बन्ध सिंहनियों से ही उचित है, कुतियों से नहीं। महाराज का

सिर लज्जा से झुक गया और उन्होंने अपने सुधार का निश्चय किया। नन्हींजान को जब यह समाचार मिला तो वह जल उठी। उसका क्रोध सीमा को पार कर गया।

29 सितम्बर को रात के समय सोने से पूर्व स्वामी जी ने रोज के नियम से गर्म दूध मँगवाकर पिया। स्वामी जी का रसोइया जगन्नाथ नाम का एक ब्राह्मण था। दूध पीकर स्वामी जी सो गए। थोड़ी देर पीछे पेट में दर्द उठा और जी मतलाने लगा। रात को कई बार वमन हुआ। स्वामी जी ने किसी को सूचना न दी, परन्तु निर्बलता के कारण प्रात: काल देर में उठे और घूमने न जा सके। घर की शुद्धि के लिए आपने हवन की आज्ञा दी। हवन किया गया। स्वामी जी की दशा और अधिक खराब होने लगी। उदर-शूल, पेचिश और वमन का जोर बढ़ने लगा। डॉक्टर सूर्यमल जी स्वामी जी के भक्त थे, पहले उनका इलाज आरम्भ हुआ; परन्तु शीघ्र ही दरबार की ओर से डॉ. अलीमर्दान खाँ को भेजा गया। इलाज बहुत हुआ परन्तु दशा सुधरने की जगह बिगड़ती ही गई। प्रतिदिन दस्तों की संख्या बढ़ने लगी। मुँह, सिर और माथा छालों से भर गए, हिचकी बँध गई और शरीर बहुत ही कृश होने लगा। डॉ. अलीमर्दान खाँ का इलाज उल्टा पड़ रहा था। इस घातक परिवर्तन की तह में डॉक्टर की मूर्खता थी या कोई गहरा भाव था- यह निश्चयपूर्वक कहने का इतिहास-लेखक को तब तक कोई अधिकार नहीं, जब तक कि किसी एक कल्पना की पुष्टि में कोई एक पुष्ट युक्ति न दी जा सके। हाँ, यह बात अवश्य सन्देहजनक है कि दशा तो बिगड़ रही थी और डॉक्टर साहब यही बताते थे कि दशा अच्छी हो रही है। ऋषि के शरीर में जहर घर कर गया था। डॉक्टरों ने यही सम्मति दी थी कि रोगी को विष दिया गया है। प्रतीत होता है कि कपटियों की प्रेरणा से जगन्नाथ ब्राह्मण ने रात को सोते समय दूध में जहर मिलाकर पिला दिया। कहा जाता है कि पता लगने पर इस आशंका से कि मेरे भक्त उस रसोइये को सताएँ नहीं, दयालु ऋषि ने किराया देकर उसे नेपाल की ओर भाग जाने को कहा था।

इतने कष्ट में भी ऋषि का धैर्य आश्चर्यजनक था। उसे देखकर मित्र और शत्रु दाँतों-तले उँगली दबाते थे। इतना कष्ट और 'आह' तक नहीं! धैर्य से रोग को सह रहे थे और पूछने पर केवल यथार्थ दशा बतला देते थे। शरीर छालों से भरा हुआ था, बोलने में असह्य कष्ट होता था, हिलना-डुलना भी कठिन हो रहा था। ऐसी दशा में भी ऋषि के मुँह पर न घबराहट थी और न खिजलाहट। वही गम्भीर चेहरा था और वही शान्त मुद्रा थी। जिन लोगों ने उस दशा में स्वामी दयानन्द को देखा, उन्होंने अनुभव किया कि इस मनुष्य में अवश्य ही कोई दिव्य शक्ति काम कर रही है। उनके हृदयों में यह बात अंकित हो गई कि इस महापुरुष के हृदय में निश्चय से परमात्मा की शक्ति काम कर रही है।

स्वामी जी की बीमारी का वृत्तान्त बहुत दिनों तक छिपा न रहा। अजमेर में समाचार पहुँचते ही आर्य-पुरुष जोधपुर के लिए रवाना हुए और स्वामी जी की दशा देखकर आश्चर्यचकित हो गये। रोग की दशा, इलाज की शिथिलता और सेवा की असुविधा देखकर आर्य पुरुषों ने ऋषि से आग्रह किया कि आप आबू पहाड़ पर चलें। ऋषि ने स्वीकार कर लिया। महाराजा को सूचना मिलने पर पहले तो वे दु:खित हुए, परन्तु फिर स्वामी जी का आग्रह देखकर खिन्न मन से आदरपूर्वक विदाई का प्रबन्ध कर दिया। विदाई के समय स्वयं उपस्थित होकर रास्ते के आराम की भली प्रकार व्यवस्था कर दी। जोधपुर से डोली में स्वामी जी आबू पर्वत पर गये, परन्तु वहाँ भी कोई विशेष आराम दिखाई न दिया। तब स्वामी जी के शिष्य उन्हें अजमेर वापस ले गये। इस यात्रा में उन्हें बहुत शारीरिक कष्ट हुआ, परन्तु अच्छा इलाज करने की और स्वयं सेवा करने की शिष्यों की प्रबल इच्छा में बाधा डालना उन्होंने उचित न समझा। अजमेर में स्वामी जी को एक कोठी में ठहराया गया, और डॉ. लक्ष्मणदास जी का इलाज प्रारम्भ हुआ।

ऋषि का मृत्यु-समय निकट आ रहा था। इलाज और सेवा कुछ परिवर्तन पैदा न कर सके। अन्तिम समय का दृश्य एक दर्शक की लेखनी द्वारा जिन सरल शब्दों में चित्रित किया गया है, हम उससे उत्तम वर्णन नहीं कर सकते, इस कारण उसी को उद्धृत किया है-

''रेल से उतारकर स्वामी जी को पालकी में लिटा लिया गया और सावधानी से उन्हें एक कोठी में ले आये, जो पहले ही इस काम के लिए नियत कर रखी थी। उस समय रात के तीन बजे थे। अक्तूबर का अन्त था। लोगों को सर्दी मालूम देती थी, परन्तु स्वामी जी के मुँह से केवल 'गर्मी-गर्मी' का शब्द निकलता था। कोठी के सब दरवाजे खुलवा दिये गये, तब भी स्वामी जी को शान्ति न हुई। दूसरे दिन डॉ. लक्ष्मणदास जी का इलाज शुरू हुआ, पर उनकी दशा में कुछ अन्तर न हुआ। एक बार स्वामी जी ने अपने प्रेमीजनों से कहा, ''हमको मसूदा ले चलो!'' इस पर सबने कहा कि ''आराम होने पर हम आपको वहाँ पहुँचा देंगे, इस दशा में बार-बार यात्रा करना ठीक नहीं है।'' इस पर स्वामी जी ने कहा कि ''दो दिन में हमको पूरा आराम पड़ जायेगा।'' यह उत्तर स्मरण रखने योग्य है। अब स्वामी जी के सारे शरीर में छाले-ही-छाले दीखने लगे। 29 अक्तूबर को स्वामी जी का शरीर अत्यन्त ही निर्बल हो गया। आपने सेवकों से कहा कि हमें सहारे की आवश्यकता नहीं है।'' तब वह कितनी देर तक बिना सहारे बैठे रहे। उस समय साँस जल्दी-जल्दी चल रही थी, पर स्वामी जी उसे रोककर बल से फेंक देते थे, और ईश्वर के ध्यान में मग्न हो

रहे थे। रात कष्ट अधिक रहा। दूसरे दिन 30 अक्तूबर को डॉक्टर न्यूमन साहब बुलाये गये। जिस समय उक्त डॉक्टर साहब ने स्वामी जी को देखा तो बड़े आश्चर्य से कहने लगे कि ''धन्य है इस सत्पुरुष को! हमने आज तक ऐसा दिल का मजबूत कोई दूसरा मनुष्य नहीं देखा कि जिसको इस प्रकार नख से शिख तक अपार पीड़ा हो और वह तनिक भी आह या ऊह न करे।'' उस समय स्वामी जी के कण्ठ में कफ की बड़ी प्रबलता थी, जिसकी निवृत्ति के लिए डॉक्टर न्यूमन ने कई उपाय किये, परन्तु उससे कुछ लाभ न हुआ। 11 बजे दिन के स्वामी जी का श्वास विशेष बढ़ने लगा। उन्होंने कहा कि हम शौच जायेंगे। उस समय स्वामी जी को चार आदमियों न उठाया, और शौच करने की चौकी पर बिठा दिया। शौच गये और पानी लिया। आज्ञानुसार पलंग पर बिठाया गया। कुछ देर बैठकर फिर लेट गये। श्वास बड़े बेग से चलता था, और ऐसा प्रतीत होता था कि स्वामी जी श्वास को रोककर ईश्वर का ध्यान करते हैं। उस समय स्वामी जी से पूछा गया कि 'महाराज! कहिये, अब आपकी तबीयत कैसी है?' कहने लगे कि 'अच्छी है, एक मास के पीछे आज का दिन आराम का है।'

इस समय लाला जीवनदास जी ने, जो लाहौर से स्वामी जी को देखने अजमेर गये थे, स्वामी जी के अभिमुख होकर पूछा कि 'महाराज! इस समय कहाँ हैं?' स्वामी जी ने उत्तर दिया कि 'ईश्वरेच्छा में।'

उस समय श्रीयुत के मुख पर किसी प्रकार का शोक या घबराहट प्रतीत नहीं होती थी। ऐसी वीरता के साथ दुःख को सहन करते थे कि मुँह से कभी हाय या शोक नहीं निकला। इसी प्रकार स्वामी जी को बातचीत करते-करते पाँच बज गये, और बड़ी सावधानता से रहे। इस समय हम लोगों ने श्रीयुत से पूछा कि 'कहिये, अब आपकी तबीयत का क्या हाल है?' तो कहने लगे कि 'अच्छा है, तेज और अन्धकार का भाव है।' इस बात को हम कुछ न समझ सके क्योंकि स्वामी जी इस समय सरल बातचीत कर रहे थे। साढ़े चार बजे का समय आया तो हम लोगों से स्वामी जी ने कहा, 'अब सब आर्यजनों को जो हमारे साथ और दूर-दूर देशों से आये हैं, बुला लो और हमारे पीछे खड़ा कर दो। कोई सम्मुख खड़ा न हो।'

बस, आज्ञा पानी थी, वही किया गया।

जब सब लोग स्वामी जी के पास आ गये तब उन्होंने कहा कि चारों ओर के द्वार खोल दो और ऊपर की छत के दो छोटे द्वार भी खुलवा दिये। इस समय पण्ड्या विष्णुलाल मोहनलाल भी श्रीमान उदयपुराधीश की आज्ञानुसार आ गये। फिर स्वामी जी ने पूछा-कौन सा पक्ष, क्या तिथि और क्या वार है? किसी ने उत्तर दिया कि कृष्ण-पक्ष और शुक्ल-पक्ष की सन्धि अमावस मंगलवार है। यह सुनकर कोठी की छत और दीवारों की ओर दृष्टि की, फिर पहले वेद-मन्त्र पढ़े, तत्पश्चात् संस्कृत में ईश्वर की कुछ उपासना की, फिर भाषा में ईश्वर के गुणों का थोड़ा-सा कथन कर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष-सहित गायत्री मन्त्र का पाठ करने लगे। तत्पश्चात् हर्ष और प्रफुल्लित चित्त-सहित कुछ देर तक समाधियुक्त नयन खोल कहने लगे कि 'हे दयामय! हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो! अहा! तूने अच्छी लीला की!' बस, इतना कह स्वामी जी महाराज ने, जो सीधे लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक प्रकार से श्वास को रोककर एक बार ही निकाल दिया।''

(आर्यधर्मेन्द्र जीवन)

लेखक के शब्द सरल और अकृत्रिम हैं। ये शब्द बताते हैं कि दर्शकों के हृदयों पर उस तपस्वी की मृत्यु का गहरा असर हुआ था। कहते हैं कि लाहौर से पं. गुरुदत्त विद्यार्थी भी लाला जीवनदास जी के साथ ऋषि के दर्शनों को गए हुए थे। पण्डित गुरुदत्त जी इससे पूर्व अर्ध-नास्तिक थे। विज्ञान के धक्के ने हृदय के ईश्वर-विश्वास को हिला दिया था। ऋषि की मृत्यु के दिव्य दृश्य को देखकर पण्डित जी के कोमल हृदय पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। एक आस्तिक किस शान्ति से मर सकता है, यह देखकर गुरुदत्त का हृदय पिघल गया और जहाँ नास्तिकता के कारण शून्य हो रहा था वहाँ विश्वास और श्रद्धा का सुगन्धित पवन बहने लगा। जो अविश्वासी हृदय के साथ मरता है, उसे भविष्य में निराशा दिखाई देती है। जिसे ईश्वर पर भरोसा नहीं, उसके लिए मौत एक अथाह अँधेरी खाई है। जिसने जीवन में केवल आस्तिकता का दम्भ भरा हो, मृत्यु के समय उसके मुँह पर से पर्दा उठ जाता है और जो प्रत्यक्ष में सन्तुष्ट दिखाई देता था, वह वस्तुतः अशान्तमय दिखाई देता है। मृत्युकाल सब पर्दों को उखाड़ देता है। उस समय कोई भाव छिपा नहीं रहता। ऋषि की मृत्यु बताती है कि उनका हृदय ईश्वर-विश्वास और धार्मिक श्रद्धा से परिपूर्ण था। उनका जीवन उज्जवल था, परन्तु मृत्यु उससे भी बढ़कर थी-वह दिव्य थी। इस भू-लोक पर ऐसे दृश्य कम दिखाई देते हैं। वह मृत्यु थी, जो नास्तिक हृदय के मरुस्थल में से भी आस्तिकता की सरस्वती बहा सकती थी।

जीवन के समय ऋषि के मित्र भी थे और शत्रु भी थे; परन्तु मृत्यु के उन सब भेदों को दूर कर दिया। देश में मृत्यु का समाचार फैलते ही सार्वजनिक सहानुभूति का एक ऐसा शब्द उठा कि छोटे-छोटे विक्षोभ दूर हो गये। ईसाई, मुसलमान, ब्राह्मो, थियोसॉफी सभी ने एकस्वर से आर्यजाति के नेता की मृत्यु पर दुःख प्रकाशित किया। जीते-जी जो मुँह संकोचवश मौन रहते थे, वे खुल उठे और भारत के नेताओं और समाचारपत्रों ने दयानन्द की अकाल

मृत्यु को देश के दुर्भाग्य का चिन्ह समझा। सभी प्रकार के भारत हितैषी सज्जनों ने ऋषि की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। आर्य समाज को कितना कष्ट हुआ होगा, इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। आर्य समाज का सर्वस्व लुट गया। उसका मूलाधार नष्ट हो गया। समाजें अनाथ हो गईं। उस समय समाजों की जो अनाथ दशा था, उसकी कल्पना इस समय करना कठिन है। अब तो आर्य प्रतिनिधि सभायें हैं, दर्जनों विद्वान् हैं, पुराने-पुराने विश्वासपात्र नेता हैं और एक के खाली स्थान पर बैठने वाला दूसरा महानुभाव विद्यमान हैं। उस समय आर्य समाज और आर्य समाजियों को एक दयानन्द का भरोसा था। कोई झगड़ा हो तो वह निपटाएँ, शास्त्रार्थ हो तो वही पहुँचे, उत्सव की शोभा उन्हीं से हो, सारांश यह कि समाज का सर्वस्व केवल वही थे। आर्य समाज में जो व्यापी मातम की घटा छा गई, वह यथार्थ ही थी।

आर्य समाज के बाहर समझदार हिन्दुओं ने स्वामी जी के वियोग को किस प्रकार अनुभव किया, उसका दिग्दर्शन पण्डित बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित, प्रयाग के 'हिन्दी प्रदीप' के लम्बे लेख की निम्नलिखित पंक्तियों से हो सकता है। स्वामी जी की मृत्यु का समाचार सुनकर प्रदीप ने लिखा था-''हा! आज भारतोन्नति-कमलिनी का सूर्य अस्त हो गया। हा! वेद का खेद मिटाने वाला सद्वैद्य लुप्त हो गया। हा दयानन्द सरस्वती! आर्यों के सरस्वती-जहाज की पतवार बिना दूसरे को सौंपे तुम क्यों अन्तर्धान हो गये! हा! सच्ची दया के समुद्र! हा! सच्चे आनन्द के वारिद! अपनी विद्यामयी लहरी और हितोपदेश-रूपी धारा से परितप्त भारतभूमि को आर्द्र कर कहाँ चले गये? हा! चार दिन के चतुरानन! इस असभ्यता-प्रिय मण्डली में आपने अपनी विलक्षण चतुराई को क्यों इस प्रकार सरल भाव से फैलाया?'' इसी प्रकार लम्बा खेदपूर्ण लेख लिखकर भट्ट जी ने यह प्रकाशित कर दिया कि जो जन आर्य समाज के सभासद् नहीं परन्तु आर्यत्व से प्रेम करते थे, वे दयानन्द को आर्य जाति का नेता समझते थे, संकुचित मत का प्रचारक नहीं।

मुसलमान-दुनिया के विचारों का प्रतिबिम्ब उस समय के भारतीय मुसलमानों के नेता सर सय्यद अहमद खाँ की राय में दिखाई दे सकता है। लाहौर के 'कोहेनूर' में आपने लिखा था-''निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहब ने, जो संस्कृत के बहुत बड़े आलम और वेद के बहुत बड़े मुहक्किक थे, 30 वीं अक्तूबर 1883 को 7 बजे शाम के अजमेर में इन्तकाल किया। इलावा इलाम-ओ-फजल के निहायत नेक और दरवेशसिफ्त आदमी थे। इनके मुतअक्कद इनको देवता मानते थे, और बेशक वह इसी लायक थे। वह सिर्फ ज्योतिस्वरूप निरंकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज नहीं रखते थे। हमसे और स्वामी दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी, वह हमेशा इनका निहायत अदब करते थे। क्योंकि ऐसे आलम और उम्दा शख्स थे कि हर एक मजहब वाले को इनका अदब लाजिम था। बहरहाल ऐसे शख्स थे, जिनका मसल इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है और हर-एक शख्स को उनकी वफात का गम करना लाजिम है, कि ऐसा बेनजीर शख्स इनके दर्मियान से जाता रहा।'' इस सम्मति को समझदार मुसलमानों की सम्मति का एक नमूना समझा जा सकता है।

अन्तिम दिनों में स्वामी जी का थियोसॉफिस्टों से बहुत मतभेद हो गया था, परन्तु मृत्यु पर थियोसॉफिकल सोसाइटी के नेताओं ने बड़ी सहृदयता से दुःख का प्रकाश करते हुए आन्तरिक भक्ति का प्रमाण दिया। स्वामी जी की मृत्यु के समाचार पर थियोसॉफी के मुखपत्र 'थियोसॉफिस्ट' ने हृदय के उद्गार निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किये थे-'एक महान् आत्मा भारतवर्ष से चल बसी। पं. दयानन्द सरस्वती जी, जिन्होंने आर्यावर्त में आर्यसमाज की बुनियाद रखी थी और इसके सबसे बड़े रुकन वा मुखिया थे, आज दुनिया के कूच कर गये। वह निडर और सरगर्मी से काम करने वाला रिफॉर्मर, उसकी जबरदस्त आवाज और पुरजोश वक्तृत्व-शक्ति से भारत के हजारों आदमी गत कई वर्षों के समय में प्रमाद और आलस्य के गढ़े से निकलकर देश-भक्ति के झण्डे-तले आ गये थे, आज भारत को वियोग से दुःखी करके स्वर्ग को चला गया।'

थियोसॉफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल अल्कॉट ने लिखा था-'स्वामी जी महाराज निः सन्देह एक महान् पुरुष और संस्कृत के बड़े विद्वान थे। उनमें ऊँचे दर्जे की योग्यता, दृढ़ निश्चय और आत्मिक विश्वास का निवास था। वह मनुष्य-जाति के मार्गदर्शक थे। वह अत्यंत सुडौल, दीर्घाकार, अत्यन्त मधुर-स्वभाव और हमारे साथ व्यवहार में दयाशील थे। हमारे दिमाग पर उन्होंने बड़ा गहरा असर छोड़ा है।'

ईसाई लोगों से स्वामी जी का बहुत खिंचाव रहता था। क्योंकि ईसाइयत की विजय-यात्रा को उत्तरीय भारत में रोकने वाला दयानन्द ही था। मृत्यु पर ईसाइयों की ओर से भी हार्दिक दुःख ही प्रकाशित किया गया। विलायत में समाचार पहुँचा। संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान प्रो. मैक्समूलर ने 'पालमाल गजट' में एक लेख लिखा। उस लेख में प्रोफेसर महोदय ने स्वीकार किया कि स्वामी जी वैदिक साहित्य के बड़े भारी पण्डित थे और प्रसिद्ध सुधारक थे। प्रोफेसर साहब ने लिखा कि जहाँ कहीं भी शास्त्रार्थ हुआ, स्वामी दयानन्द की विजय हुई। देश के सभी समाचारपत्रों ने ऋषि की मृत्यु को देश का परम दुर्भाग्य बतलाया। इस प्रकार देशभर द्वारा कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किए हुए ऋषि दयानन्द ने दीवाली की रात को अभागी भारत-भूमि को छोड़कर परलोक की यात्रा की।

॥ ओ३म् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इ वते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। य.40/3

जो ईश्वर के स्थान पर कारण रूप और कार्यरूप प्रकृति की पूजा करते हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	कुलवन्त राय शर्मा	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

उत्क्राम महते सौभगाय।

य. 11/21

हे मनुष्य ! महान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, राहों रोड, नवांशहर

WebSite: www.blmgirlscollege.com, email:blmcollege@yahoo.com
Phone No. 01823-220026, Fax: 01823-221474

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

प्रमुख विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
3. गरीब वर्ग की छात्राओं के लिये विशेष सुविधा।
4. एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी), पी.जी.डी.सी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., ड्रैस डिजाइनिंग डिप्लोमा (U.G/P.G), कॉस्मोटॉलोजी डिप्लोमा (U.G/P.G) आदि कोर्स की व्यवस्था।
5. खेलों की उचित व्यवस्था (गत वर्षों से हैंडबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान)

❖❖❖❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

देशबन्धु भल्ला	सुरेन्द्र मोहन तेजपाल	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	उप प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वायर्न्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे न नो वसून्याभर॥ १ ।।

हे सुखो के वर्षक, सबके स्वामी, प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों की उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो, और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवान ! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख–रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

दीपावली के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

❖❖❖

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

❖❖❖

अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

विनोद भारद्वाज	**सोहन सिंह**	**एस.के. बरूटा**	**संजीव डाबर**
प्रधान	उपप्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥

(सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी) हे मनुष्यो, तुम परस्पर मिल कर चलो, मिल कर बातचीत करो, ज्ञानी बन कर तुम अपने मनो को भी एक बनाओ, जैसे कि तुम से पहिले विद्वान देव पुरुष सम्यक् ज्ञान वान् और एक मति वाले होकर अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।
3. अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।
4. आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	**ललित शर्मा**	**जिया लाल शर्मा**	**आरती कालिया**
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	**ललित कुमार शर्मा**	**अचला भल्ला**	**अमित सभ्रवाल**
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार विमन नवांशहर

❒ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❒

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

◆◆◆

डा. सी.एम.भंडारी	**डा. मीनाक्षी शर्मा**	**गुरविन्द्र कौर**
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।

(ऋग्वेद. 1/4/6)

हम सदा परमेश्वर की शर्मणि-शरण में रहें।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

सतीशा शर्मा
सैक्रेटरी

सविता उप्पल
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ– हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान–साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

अरुण थापर	**श्रीमती राजेश शर्मा**	**राजेन्द्र कुमार**
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

सख्ये ते इन्द्र याजिनो मा भेम शवसस्पते।

त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम।।

भावार्थः प्रभु के भक्तों में ऐसा विलक्षण बल आता है कि वे किसी से भी डरते नहीं क्योंकि जिनका रक्षक स्वयं प्रभु होवे, उनको डराने वाला कौन हो सकता है? वहीं प्रभु सदा अपराजित और हमेशा विजयी है इसलिये उसी को नमन करने योग्य है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य गर्ल्ज सी. सै.स्कूल, पुराना बाजार, दरेसी रोड लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में शहर की एक सौ दस वर्ष पुरानी संस्था

प्रमुख विशेषताएं

1. नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक गणित व विज्ञान विषयों के लिये **Smart Classes** की विशेष व्यवस्था।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़ाने का उचित प्रबन्ध।
3. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ
4. स्वच्छ जल हेतु फिल्टर, बिजली के लिये जनरेटर, अग्निशमन यंत्रों इत्यादि सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न
5. बोर्ड परीक्षाओं का शत-प्रतिशत परिणाम।
6. गत वर्ष की अपेक्षा छात्राओं की संख्या में वृद्धि।
7. कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
8. भव्य भवन खुले व हवादार कमरे, समृद्ध पुस्तकालय व सुसज्जित साईंस लैब।
9. छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिये शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था।
10. सांस्कृतिक व सह सहायक गतिविधियों का आयोजन
11. **Morning Assembly** में नैतिक मूल्यों व अच्छे संस्कारों को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा।
12. प्रबन्धकृर्त सभा के सभी सदस्य संस्था को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये निरन्तर प्रयासरत।

विशेष नोटः जरूरतमंद व योग्य छात्राओं के लिये निशुल्क पुस्तकें, वर्दियां, स्वैटर व जूते।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

विजय सरीन	वजीर चंद	रणवीर शर्मा	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	उपप्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) के पावन पर्व पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाबी पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विद्युत जेनरेटर तथा कैंटीन की उत्तम सुविधा।
6. खेलने के लिये खुला मैदान।
7. शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम।
8. उत्तम पुस्तकालय की सुविधा

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

अरुण सूद	श्रीमती राजेश शर्मा	मुनीष मदान	निर्मल कान्ता
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना ऋ. 1/3/12

ज्ञानमयी वेद वाणी अपने ज्ञान से ही बड़े भारी ज्ञान सागर का उत्तम रीति से ज्ञान कराती है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व

के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित क्षेत्र की एक मात्र अग्रणी नारी शिक्षण संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

यू.जी.सी. एक्ट 1956 के सेक्शन **2 (F) & 12 (B)** से सम्बद्ध नैक **(NAAC)** द्वारा ग्रेड **"B"** सी.जी.पी.ए. 2.61 से प्रत्यापित संस्था में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन बरनाला +1, +2 एवं महाविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विभिन्न कक्षाओं, विषयों व कोर्सों के शिक्षण की सुचारू व्यवस्था।

स्नातक शिक्षण कक्षाएं व कोर्स

बी.ए. :- हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, लोक प्रशासन, कम्प्यूटर साईंस, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, फैशन डिजाइनिंग

❒ बी.कॉम

❒ बी.एस.सी. (मैडीकल/ नॉन मैडीकल)

❒ बी.सी.ए.

❒ बी.बी.ए.

यू.जी.सी. प्रदत्त बी.वॉक कोर्स:

❒ साफ्टवेयर डेवलेपमेंट

❒ फैशन डिजाइनिंग

स्नातकोत्तर शिक्षण कक्षाएं व कोर्स:

❒ एम.ए.पंजाबी

❒ एम.ए. इतिहास

❒ एम.एस.सी. (आई.टी.)

❒ एम.एस.सी. (एफ.टी.)

❒ पी.जी.डी.सी.ए.

विशेषताएं:-

❒ वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय

❒ बहुद्देश्यीय विशाल सभागार एवं इन्डोर स्पोर्ट्स हॉल।

❒ सुविधा सम्पन्न छात्रावास।

❒ वाई फाई प्रांगण।

❒ सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।

❒ उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।

❒ आधुनिक साधन सम्पन्न विज्ञान प्रयोगशालाएं

- ❒ भौतिक विज्ञान
- ❒ रसायन विज्ञान
- ❒ जीव विज्ञान

❒ स्वच्छ व स्तरीय कैंटीन व मैस

❒ जैनरेटरों व वाटर कूलरों (आर.ओ.) की व्यवस्था

❒ विभागीय कक्ष

❒ गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।

❒ एन.सी.सी.,एन.एस.एस.,यूथक्लब, रैड रिब्बन का सुचारू प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा.सूर्यकांत शोरी	**भारत भूषण मैनन एडवोकेट**	**केवल जिन्दल**	**डा.नीलम शर्मा**
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के

पावन पर्व पर

गांधी आर्य सी.सै.स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह-क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध।

भारत भूषण मैनन एडवोकेट
प्रधान

सूर्यकान्त शोरी
वरिष्ठ उप प्रधान

संजीव शोरी
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

रामकुमार सोवती
डायरैक्ट/ प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

भावार्थ: हे प्रभु हमें अंधकार से हटा कर प्रकाश की ओर ले चलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

❒ विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित विशाल भवन।
2. उच्च शिक्षित, अनुभवी तथा निष्ठावान अध्यापक।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां तथा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन
4. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा (2012) में प्रिया ने पंजाब में सोहलवां तथा जिला बरनाला में पहला स्थान प्राप्त करके नाम रोशन किया।
5. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
6. फिल्टर पानी का प्रबन्ध और साइलेंट जेनरेटर।
7. बच्चों के लिये प्राथमिक सहायता उपलब्ध।
8. बच्चों के लिये हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम उपलब्ध।

☆☆☆

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन
प्रधान

भारत मोदी
मैनेजर

संजीव शोरी
सैक्रेटरी

वन्दना गोयल
कार्यकारी प्रिंसीपल

अनीता मित्तल
डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

''अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।''

अनिल कुमार	**सुरेन्द्र गर्ग**	**निहाल चंद एडवोकेट**	**सुषमा कुमारी**
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः

ऋग्वेदः 1/97/4

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो ! आप हम में उत्तम यश, धन और ज्ञान धारण करें।

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं

वैदिक कन्या पाठशाला औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. आधुनिक कम्प्यूटर लैब।
5. वाटर कूलर तथा ध्वनि रहित जनरेटर का उचित प्रबन्ध।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. साफ सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
8. आठवीं कक्षा तक के बच्चों को दोपहर के मुफ्त भोजन की सुविधा एवं मुफ्त पुस्तकें।
9. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
10. गरीब एवं योग्य छात्राओं को आर्थिक सहायता।
11. बोर्ड की कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम।
12. कल्चर संगीत कार्यक्रम के लिये योग्य तथा अनुभवी शिक्षा का प्रबन्ध।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**अशोक कुमार अग्रवाल**	**विजय अग्रवाल**	**नीरू सैली**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी ओर महाश्सय होते हैं, सत्पुरुष कहलाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै. स्कूल, बठिंडा

विशेषताएं:

Ph.No. 0164-2238328

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, R.O पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

अश्विनी कुमार मोंगा
प्रधान

श्रीमती ऊषा गोयल
संरक्षक

गौरी शंकर
उप प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग
सचिव

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

सत्पुरुषः- सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के

❖❖❖

पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

मुख्य विशेषताएं

1.उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग

2.खुले तथा हवादार कमरे।

3. वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल।

4. शानदार परीक्षा परिणाम

5. उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र कौशिक
प्रधान

अश्विनी मेहता
मैनेजर

प्रदीप कुमार
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां,जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य
प्रधान

विशाल पुरुथी
मैनेजर

श्रीमती सारिका
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरितादृवाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ

निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व
शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के
विकास के लिये निरन्तर कार्यरत,
नैतिक शिक्षा पर
विशेष बल।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और
आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये
सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू सलूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

इमा ब्रह्मा सधमादे जुषस्व

ऋग्वेद 20/11/3

इन वेद वचनों को, हे विद्वन ! हर्षस्थान व सभा सदन में सेवो अर्थात बोलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10.रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11.प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

शिक्षा जगत में महकता हुआ चमन

सोम प्रकाश — प्रधान

शैलेन्द्र मेहता — प्रबन्धक

संतोष गोयल — प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल
उपप्रधान

रितु गक्खड़
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल
उपप्रधान

एस.के. शर्मा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥ (यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज आफ एजुकेशन

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल
उपप्रधान

एम.एल. जैदका
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव ''दीपावली'' के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल सी.सै. स्कूल-मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

❒ विशेष आकर्षण ❒

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. +2 की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व साप्ताहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल
प्रधान

नरेन्द्र सूद
मैनेजर

समीक्षा शर्मा
प्राचार्य

॥ ओ३म् ॥

देवत्तं ब्रह्म गायत।

ऋग्वेद 1/37/4

ईश्वर प्रदत्त वेद का सदा गान करो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖

एम.डी.ए.एस. सी.सै.स्कूल मोगा

❖

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

❖

❒ विशेष आकर्षण ❒

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।
2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।
4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।
5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें एम.डी.ए.एस. सी.सै.स्कूल मोगा में दाखिल करवाएं।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	कृष्ण गोपाल	देवेन्द्र गोयल
प्रधान	*उप प्रधान*	*प्रिंसीपल*

॥ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव ''दीपावली'' के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल मोगा

❒ प्रमुख विशेषताएं ❒

1. आर्य समाज की विचारधारा एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संदेशों के प्रचार व प्रसार को समर्पित संस्था।
2. विशाल, शानदार, हवादार तीन इमारतें एवं खेल के मैदान की व्यवस्था।।
3. जनरेटर, वाटर कूलर, साफ पानी के लिये आर.ओ. की उत्तम व्यवस्था।
4. नर्सरी से 10+2 (आर्ट्स एवं कामर्स) तक पढ़ाई का समुचित प्रबन्ध।
5. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त सुयोग्य अध्यापकगण।
6. कम्प्यूटर शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग एवं खेलों पर जोर।
7. औपचारिक शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
8. लड़कियों एवं गरीब वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष सुविधाएं।
9. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं एवं घरेलू परीक्षाओं में शानदार परिणाम

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल मोगा में दाखिल करवाएं।

अशोक परूथी एडवोकेट
प्रधान

बोधराज मजीठिया
मैनेजर

अनीता सिंगला
प्रिंसीपल

ऋषि चरणों में श्रद्धाँजलि

ले०—श्री देवेन्द्र गुप्ता 342 बख्शी नगर, जम्मू

अमर लोक से आए दयानन्द अमृत पान कराने को।
भेद-भाव और छुआ-छूत के मिथ्या भ्रम मिटाने को।
पीड़ित मानवता के धरती पर कष्ट मिटाने को।
लोप हुई वेदों की विद्या को पुनः दर्शाने को।

ऋषियों के प्राचीन धर्म की गौरव गाथा गाने को।
आर्य जाति की डूबती नैय्या परले पार लगाने को।
बन्धन से पराधीन राष्ट्र को सत्वर मुक्त कराने को।
भारत से अज्ञान निशा की कालिमा मिटाने को।

वेद की परम पुनीत और पावन मधुर ऋचायें सुनाने को।
सत्य का करके अनावरण असत्य विचार मिटाने को।
जाति को सुमार्ग दिखा कर नैतिक शक्ति बढ़ाने को।
मिथ्यावाद आडम्बर और कुप्रथायें जग से मिटाने को।

दे के चुनौती विधर्मियों को सत्यार्थ प्रकाश बनाने को।
अत्याचार अनैतिक कृत्य और आतताईता मिटाने को।
ईश्वर की सर्वज्ञ स्वतन्त्र सत्ता का भास कराने को।
बुतों की पूजा से मानव को मुक्ति दिलाने को।

तर्क और युक्ति से बुद्धि परक बातें मनवाने को।
कौम परस्ती और मतान्धता की दीवारें गिराने को।
वेदों के विरुद्ध भाष्य कर आस्तिकता फैलाने को।
नारी जाति का मूल्यांकन कर मातृत्व दर्शाने को।

कलह क्लेश, अकरुणा, क्रंदन से जगजीवन बचाने को।
त्रस्त मानवता को त्राण दे विश्व बन्धुत्व बढ़ाने को।
विष के स्वयं प्याले पी कर अमृत पान कराने को।
आये थे युग पुरुष दयानन्द भारत राष्ट्र जगाने को।

परम धैर्य के युगावतार दयानन्द तुम थे दया के सागर।
करुणा, मैत्री और अहिंसा भाव किए थे तुमने उजागर।
युगों-युगों तक स्मरण करेंगे दयानन्द तुम्हें जग के मानव।
तेरे ऋण से उऋण न होंगे आर्य जाति के भावी बालक।

कोटि-कोटि प्रणाम तुम्हें हो देव दयानन्द युग प्रवर्तक।

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल—011/2018-20

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org